ण

अरण्यकाण्ड

आरंन्यक्कांडप्रारंभः ॥ ॥ छ ॥

श्रा र॰ ॥श्रीगनेसाएनमः अथलिषतेआरंन्यकांड॥ दोहा जैगुरगणपतिगौरिजैजैसंकरसुषधाम जैरिउ
१ सुदंनजैलषनजैतिभरतसियराम करउसलकवीनालिऐजैतिसरस्वतीदेवि गुनगननजासुअनंतप
रहैसुरनरमुनिसेवि चौपाई लषनसीयरघुवरछविछाए भीमदंडकारन्यमाहिआए मुनिजनआ
श्रमनदाविलोके जहंकरिकेहरिसंगहुंअसोके २ वरवलकलजहंवहुवगराए वोलनिविउ
लविहंगनहंभाए वंसनतेजसोसोभितकेसो मारतंडमंडलनभजैसो ठौरठौरमुनिवालकआ
वै मषसालावहुंदिसिछविछावे कुसमृगछालाकलसभरेजल जज्ञपात्रसुभसमिधिमूलफ
ल फूलेफलेविटपवहुनीके फिरियेननलवहुंस्वादअमीके होमधूमसोहैनभमंडित वेदघोष
जहंहोतअषंडित दोहा सरसीसोभितसरसिजनिकुमुदनिहंसनिमीन हरितपीतविमजुत
पुहुमिआश्रमकंटकहीन चौपाई लसतिनहांमुनिसहससअठासी सांतदांतवेदांतप्रकासी कंद
मूलफलभ[illegible]सेनमचीने ब्रह्मनिरतसवअभिमानहीने कसतनतेजजंमारिलजाए वलक
लजुतमृगचर्मसुहाए मुनिसमाजलषिधनुषउतारी चलेरामतिनकरनसुषारी रामहिजानतकिते
१

सबु आए प्रकार करहे सुरूप लभाए सबै मुनी सनाथ कहँ चीन्हीं बहु प्रकार रज्ञा पुनि कीन्ही पु
लकित तन बचन तन छवि तकि तकि लसे रिषि बिषरः मि श्रैंन मिसु छकि छकि इमि कै गये सबै बस से
मारै चहँहिं सुति सहै संग विहारै दोहा अस्तुति करि बहु भाँति मुनि रहे चित्तै कर जोरि
न अंतर की गति जानि प्रभु बिहसि लिये उचि चोरि चौपाई पुनि मुनि अति अनुपम सुख छाए॥
एम हिं निज आश्रम लै आए अरघ पाद दै पूजन करि कैं रसहिं पांइ परम सुख भरि भरि देख हु उमा
सरूप लोनाई विज्ञानी मुनि गये लोभाई छवि छवि किरम सरूप निहारै तेहिं मद परमानंद
हि वारै पुनि प्रभु कहे आश्रम सर भंजे मिले हु आरगव ने हुं मम संजे बसे रैनि भरि जागे भो
रै करि निति कर्म चले बन घोरै मृग गज व्याघ्र केसरि नतुरे बेलि हुं बिटप लसे तत रपुरे पिव
रन छपि से तिन धुंनि धारी सरित न नीर स्याम मे कारी दोहाः लखन सों रघुनाथ तहँ लखो नि
साचर घोर धरि सरीर कुंज ललसय लसा बत जंतु निज घोर चौपाईः मखहि हत्ति श्रुति घोर
बडे हैं रहँ अंतर नर भूरि गडे हैं पतिरैं चालवा बेकी बाले करारे मुख करालजंतु कालै तीन सि
र खर नव्या घुरु चारि है चक - रसम गगज सिर मारी छरि बिल लहि कर पंकजी ने जाति
से मे सब मपाबंन कीन्हे लखन सी यप मतिहिं लविधा यो भीम नाद करि धरि निक पापो च

आर॰
२

ति आतुर तहिं समीप तिहि गयो सेना नृप्ति तिहिं करत अस भयो बल्कल चीर जटा सिर धारी आ
युध सहित लिये संग नारी 'के सेत यस्ती केहि विधि आये मोहिं को उ मुनि नाहिं बताये
दोहा मै विराध यहि विपिन बन मुनि गन करउं अहार जानो चाहत अनुज मन बोले राम उदा
र चौपाई हे खड़ लखन प्रिया अकुलंका जीन मे यह निसाचर बंका अस कहि कै कै की
करनी लछिमन सों विलसत बहु बरनी सुनत लखन अति क्रोधित बोले फरकत अधर
धनुष कर तोले हम प्रभु सकल चराचर सांई बांनी कहि अबला कीनाईई हजे सासन
मोहि रघुबीरा मारि गिराऊं यहि हिं निनीरा सुनि वयु छ कि रमि कह्यो विराधु को ते कहे
सरषु अगाधू राम नाम निज कुल कहि गाये सुनि तेहि चाय बहु पुछत भये सो कह पितु
जग्यं दं मिनि माता नाम विराध जगत विख्याता दोहा कहहरि हे जवसुत सहिं सोच हुं हामि न
नि मार हम महिं लखन लखनै जुमें लिपसि परहुत अति चार सोरठा विधि को मोहिं वरदं
न करत न तन आयुध लगे बाते अवध जतन न जीव चराचर जहं लगे चौपाई
तजि सिय जाहु भाजि लै प्रानहि सुनि हसि प्रभु कर फेरत बानहिं नीच मीच तेरे सि

रनाची मातन नचबममबांननबाची असलकहि सानबांन दिएमारे बाधिताहि छितिते
नासिधारे छंडिजांनिकिहिंनवसठधापो लखनसतिनप्रभबांननछायो सोजभ्रां
नतेनजेंसरकरे पुनिधासोकर सलतिधरे वेगवंतसठसूलचलायो जगबां
ननप्रभुकारिगिरायो नमनतेगिन्योसूलकरिकैसे राहकेतुहतचक्रहिजैसे पुनिहि
उवंधुधारअसिमारी सोउआइनिजकंधनिधारी छंदहरिगितिका लैचलौहरिसोनि
रखिमारगआयनोईचवनसो तहँकरयौमहमसकारसुंदरवेननिरमैलसनसो
ॐ वहँकालमहँपरमिल्योबांहनंचलहमगकिनहरखसो कहलखनविलपतजानु
कीअवजानहमउंवरखसो सोरठा सियविलापश्रवननिसुन्योलख्योवनहिंअति
घोरमहि डारेहेउकारियजेहनिकूपानकरिजोरवधरनिगिरयोविनमुजंनिसोपरवि
उजिमिवरसेल सानमठकेनहुंहन्योगइतासुमनमैल चोपाइ विधिवरवससोमरै
नमारे तबप्रभकहमैमंत्रविचारे वेगिलखनएकगाडबनाओ उठितिनममपद
चरनचपाओ बाल्योतकससनिप्रभवेने जोंसोतुमहिंछोनदकेचैनै बड़हिरहरविउरकहलो

आर॰ निरधि रामस्याल ज्ञमैं बरसाधु जौं सो बैरीसीं वडभागी जौं न्यो लखैं नहिं ज्ञति ज्ञनुरागी
३ मैं गंधरव हौं तुंबुरनामा नरेउ कुवेर श्राप ज्ञभिरामा तातें तनुपर परसहिं यां येउ जन्मु वं
नेकें न कलेस नसां येउ श्रापपाइ मैं तिन हिं रिझायो तबतिन मो कहँ मे रवतायो हे॰
जब मारिहैं रघुनाथ तोहिं तब व्है हौ निज लोक सो सुनि मैं रखि न हिये निसिचर भयो ज्ञ
सोक ११ चौपाई गाड़े हिं गाड़ कठिं हिं मम प्रांना सो प्रभ पहिलहिं रचेउ विधाना मोहिं
गाड़ि अवलोक पठैये मुनि सरभंग पास प्रभु जैये तांहि गाड़ि सीता पहँ आये अति र
रुचि तती निउँ जेन भाये करि अस्नान चले पुनि आगे मुनि आश्रम कहँ जे अनुरागे त
तां व्है कास ई दूर परे सो उतरे मारजेउ संभ लेसो कह्यो अनुज अनुसासि पहिं ज्ञाई मन
जोन कहुं पर है सुरत रे छनविल मौ तो मै चालिचो सौ सुनत वचनु तिन तै सरि कीनो
रामहिं आवत निरखि सुरेसा तुरतहिं अयन गयो निवेसा तब तो तिहुं जन पुनि मुनि तिनि
कर जार कियै परनाम मुनि यक । रुकच बहु ल्यो न विछवि अति अभिराम १२ चौ॰
आतिथ करि पुनि फल सुभ सी से तरघुनाथ परख सों लीन्हे पूंछ्यो प्रभु सुरपति आग ३
मन बात सरभंग सुनहु सुख भवन जप बल ब्रह्म लोक मै पायो तेहिं तजि विधि वा

सुवातिंपठपो तुवरसनहिंमैंननहिजपो लहिहरसनकिरतारपमयो चवसयतपवल
सोहुहमारो मुनितिसकामैरामविचारे मरुमुससकारकत्योमनमेगुनि रामधनीनहिं
लेयउचितमनि पुनिकरकहियवसैरामकेतिंवन मुनिकहजैपुजहांसुतीछन मेंतावि
नपछिमहदुमारग जायहुगहेंकरतिसरसारंग लेता पुनिमुनिकरिचतिचालुरिकसो
लनहेसबधाम विनइवजोलोनननतजोरलोचवेसियराम सोरठा लखंनसीयरघुनाथ
रावमनतिंयेहोचनल वरतंनंधरिमुनिनाथ कमतिंमुतिविधिलोकजो २८ चौपाई
रामसियाआगमनविचारी आयेवहुमुनिवहुतपधारी रामतिंवहुसराति केवोले ध
र्मअर्थसवआपनबोले जोरिजोरिसिंगरेजुगहाथा कहेतिंहमेहुजोविगरेनाथा ध
रमसीलसरनागतपालक हरंजनअसुरनकुलधालक तेतिंनपकहें अधरमआति
होरे लेरयागयालेनतिंजोरे जाकेघनाधींनसमअहई तेलिंनपगतिजोगिहुनहिंल
हई चोथोभागधर्मकोपावे तिनतरतेंनछितिछितिचढावे हमरेतुमसोनाथगोसां
ई निसिचरहंनेअनाथहिनाई देहा देखहुमुनिगंनलाइपेयरेअनेकनिरासि धोरय

आर: कुसैनकीसयंनविचरैवनमुनिनासि चौपाई लंकेतेचित्रकूटपरजैंता करहिंनिसाचरमुनि
कुलअंता पाहियाहिअबघालनहुराम अखिलसहुवलतेजहुधाम तुमसोप्रभुइजोक
४ हंयैये जाकेपासयुकारनजैये दूबहुस्योलधर्मप्रतिपालौ वेगिनिसाचरकुलअवधा
लौ चलिस्यालसुनिआरतबैनन्हि बोलेरामभरेजलनैननि अपनेहितेयहिकाज
हिंआयेउं मुनिमुनिनापन आयसुपायेउं भयेमखलाफल मोहिवनवासु करिहौंउ
सरेरिपुजंतनासु आतासहितमोरवलभारी देखहिंमुनिगनहोहिंसुखारी दोहा: अस
कहिलछिमनसियसहितमुनिनसंगलेराम चलेसतीछनआश्रमहिलखतगिरिनअ
भिराम ११ नाधिसैलवनसरितवहुयहुंचेतेहिंपुलजार जहासुतीछननामकोयहुसन मा
मुनिराइ ७ चौपाई विविधिभांतिहुंप्रभुहिंजगाये जेगनतनहिंसुनिध्यांनलगाये तेउ
हिउरचतुरभुजहिंवपुकीन्हो मुनिअकुलाइबोलिदृगदीन्हो प्रभुजदेखिआगेअनु ४
११ रागेयो उठिसहैरवयुपुनिरवैनलाग्यो पुनिपुनिनवकिनवकिदवकिलहुघपायो जेनुअति
लिखितसुधासरपायौ मुनितनअतिपुलकावलिआई लखहितेमजैतेसीसरठारे

आँनर अबु ठरत देउ नैननि ऊपमा देत सकुच बिसरि रचैननि रबि लखि जनु जग सरासिजलरषी सो
हरि कन मधुकर हं नवरसी सोमति दसा देखि दिदेउ भाई सियजुत पाजे प्रेम मतांई देख ननलुधि
आये पांप यरि जोरि यां निमुनितर भोज्यो अस्तुति करत पुनि परम हरष उर छार भुजंगप्रयात
आये राम सीतापते तें छिप सेवा रताः सर्वदेसांन धात्रा हरिदेवा नितान्तं त्वमेव क्षमासील श्रवे
सतं पालक सूर्य रांके सहश्वे १ मायादि सत्वते वाँन चापा धिरामा जटा वल्कले मुक्तिता पूर्ण कामा
मा जानानंद हत्तीत लीयादि मूर्ती मही पाद जानात यस्तो मि पूर्ती २ नमवाम्भोधि संतारने या
दयाद्यं चिदानंदरिद्धि मंत्रानंदसद्यं समं विद्धि मा तास तामसस्तासे विमुक्तो न यो यास्ताक पं मो
दयासे ३ निमग्नं मता मायया तेन्य कूपे ४ कलत्राद्यजप्रेम संबंध रूपे निरी द्यागतो हा यमे
पसरूपं समुद्धारकामो सिसाकेन भूयं ५ यदा सिंते सर्व भूतेषु वासः सदानन्द जुक्तो नमा
पाप्रकासः जनेभक्तिहीनै विमोको मनचित्ते तनो विश्वमायामहंकारचित्ते ज्यथा जोगमेतन्न
रांम्यरूपं त्वयाहि यते सर्वभूपाधि भूयं जयातो यथा त्रे रवि मोत्यनेकः सथा मोत जुक्तस्य
मासि त्वमेकः ६ अहो भागमेतत्व मोनेस कस्यः यतः यादस्य दृग्न भाया यरस्य अहं राम

श्रीरः दुःस्यप्रमहन्तनस्तत समीहेसव्तसीतपासेवितंपत ॰ सरसुं दुःचतं लसन्नंरत्नासं मनोज्ञापुषं
५ कामकोटिपूकासंम दुःपार्ईहनंसोचितं लहमरतोन पदंधिद्रदपसर्वसासेवकेन २ दरोन्कु
लं तैनोसोन्नलसामगाचम परंजोनकोरनेरसं तेरपाचम पसोयस्मनितंमहेसोनगीतम मु
रातंभजेरमचंदूलसीनम ३ दुःपरंममूर्तिर्मन त्वाविभातु महामुक्तिःसंनोवति जोहनुयातु न
चान्संवरंरामकांदेकनयितरिपाधिपप्रेमसुमनिर्मलमापि ४ होता महाराजदसरथतनयः
सुषमाजितवहुकाम ब्रूधिरसनंममसर्वसंयसतरामतवनाम ५ चौपाई लक्ष्मणपेवं
शुभवेसम् निजतेजोजितवहुरिपुसेसम् निजतेजोजितवहुरिपुसेसम् तमवोचद्विनकु
रकुलकेत सस्मितमिदंधर्ममपसेत मदुपासनयाजातममलतर मितिजानामिमनसु
वमुनिवर अजननमरनमयतापनासनम् विनाकिमयिनहिमभोपासनम् ६ ममसेवंन ५
निरतस्यानिरंतर मेयमेवकुस्योहंनरवर ७ त्वयाकृतंममपत्तवराजं यतितस्यानुहंप
हमाजम पतोमत्तिमयिपरमामक्तिः सकलेन्द्रियरोधकृतामक्तिः त्वमसिमक्तःरवंहेम
निनापक संततंममनिर्मलगुनगायक होता देहानेमपि हमनाभविताततवजितचित्त

देखानामअपिदुर्लभआरामनाममवरविन चौपाई सोखनिमुनिलवहि आनंदगाथा कल्पोजोरिक
रमयोसनाथा सवतयफलउलहिंसमरथंनकीन्हा तीन्ह्योरामहरखपुनिलीन्हा हरिकर
वासहंमहिंकहहुचहिये मुनिकहहरविहंहेप्रभुरहिये वसिहेमुनिहुसवैरनआई मैकरि
हौप्रभुकीसेवकाई येप्रभुआश्रममगनिवंधाई वसियेरहोमुनिहिंकीनाई भ कल्पोरा
मलखुनिमदुमुसकाई सनेहुनीहंनयीतिमहाई मगनिहनेजोउथमनिनाथा जैहैप्रात
धरेधनुहाथा स्वनतकल्पोमुनिअतिअकुलाई वसहुकरहुभावनरघुराई होतपर
मखुतीहंनप्रेममनयेंनिपुनिवरननराम सीयलखनजनआनिसुसीजलफलअनि
राम चौपाई करिसंध्याफिरिआश्रमआये मुनिसंगपरममोदसोदाये सुखसोसिंग
रीरैनिवितारे करि नितकर्ममुनिहिंसिरनाई कहसंगमुनिआलइहीकरावै कहियेतौ
तिनकेआश्रमजावै भरिअवकहिमुनिआसिषदीन्ही पुनिकरजोरिविनेअसकीन्ही करि
येमहिसनाथअवजाई पुनिप्रभुमोहदेवमोहिआई मुनिनसंगतीनोइविदाई चले
वनहिंमुनिआसिषपाई हरिसोनवसीताहंसिवोली धर्मसास्त्रसाररिमनखोली :

आरं॰
८

सुहृमाबिसेविचारहिंनापा होतअधर्मनकोवहुगोपा सेल पायतीनिसेहेवडेपरसल
कोगौन बिनावैरकोमारिबोमिथ्याभाषनजौन २० चौपाई सतिवादिनमहरेषतुम्हारी
परतिपसयनेहुंनाहिंनिहारी इन्द्रनइमेधर्मपुरधारी सवकहंप्रिसपितसासनकारी च
ले आपुजोअसरहेधारन बिनाविचारेहिंकरिपुनधारन बिन अपराधजोप्रानिनमा
री भयोअकारनयहअघभारी धर्मनीतजेजाननआहहीं बिन अपराधहिं वैरन
करहीं करहंधनुसरकोहमनिवरवेसा अस्मुनहयनापनुवहेसा कैगमनहुंघरराजहिके
५ रै कौनेंठानौधनुसरधरी सबमुनिनकोधर्महिंनासै सोआचीनसुनोरलितासे सेता
सत्यव्रतीमुनिएकरह्योसंयमहमस्यानिधांन सुरपतिनेहितपहरनहिता पानीरदी
क्षिपांन चौपाई लिपेलिपेनेहिनेहिमतिगई तेहिसंसरगाहिंहिंसामई तेहिंसंसर्ग ८
नकीसोपायो सोरइमिसंसहिं तुमहिंसुनायो करहिंनमनिजंनअसुनधांन जा
तेलोरजीवनवधकारन अस्मुनिजुनएकआरतरहन बहुनसेवमुनिकरहिंविचार
न नायनतुमकहंसोनेसिखायो मुनिधर्मनिअस्मारनकरायो सुसनेसुमनहिं पाव

रिग्यानी करितपहलेससहैं मुनिज्ञानी भावतमोहिं सुचिहैतनयकारिवो सांतसुभारतवननाहिंवि
चरिवो नारचयलतानेंजोकरहीं दंभनजोगसोंमीतुमसही सोरठा कह्योविहसिमद
राम निजकुलजातिरतुमकियो सुनहुं वचन अभिराम तुम्हेंकह्योसोधरमवर ३२ ते:
दंभीधनुधारनकरहि लनरहिन आरत चैन दंडकवासीमुनिसकलनयेभयहिकेअेन
३३ चौपाई आरतवैनहिं विविधिप्रकारी जरी आंनितिनसरनतमारी जदपिसमर्थनि
साचरनासा देहिंआयनहितयदतिनासा तिनकोदुखमोहिंनहिंसहिजयो तातेंकरत
प्रतिग्रहियो मुनिमधिप्रनकरिकैमित जिजाई मोंमिनितनयहहैकीजाई तुम्हरे
लघनहुत्यागहिकरो प्रनप्रतजोनजोप्रनधरो मुनिपालहुंमैविनहूंकर अवनोप्रेमम
सरनतिंगहें मुनिजननसोंकहुसवहि निजज्ञानी चसकहिगमनेसांरगपानी जटामुकुटसे
ररासिरराजै विचविचगुंदिसुमननतिभ्राजें दोहा लसैंजगलतनीरकरिपीठिपयोमगचर्म
मालतिलककीन्हेंललितकसेवंधुसुचर्म चौपाई पीढलसैंनसरतिसकफेरत सावधान
वै चहुंकितहेरत महिसियासोहति अतिकैसी मनिंसिंगारज्ञानमधिजैसी देषतसरि

आरं° तौ सरमृग विहंगन गजगैंड़न बाराहैंन अरनन जाइ मुनिन पल्लवि पोसु धारी विहरैं तहं दसवर्ष
७ विहारी फेरि सुतीछन आश्रम आये सोपुलकिन मुनि अति मुद पाये तहं वसे सुख सों कछु
काला मुनि सों बोले वचन रसाला आश्रम तें अगस्ति को कहां जायो चाहौं मैं मुनि तहां
हरषित स्यो तब मुनि अस कह्यो पहैं मई प्रभु चाहत रह्यो तेरा जो जैन यों च अगस्ति को आश्रम गस्ति
हेरि घुराइ चलिय संग चलि हौं मई चले राम सुख पाइ प्रथम अगस्तिहिं अनुज को आश्रम निरख्यो
जाइ तिन सों मिलि पुनि वसि चले गये जहां मुनि राइ चौपाई कह्यो लखन सों राघउ राई इहां रहत म
मुनिगन सुख मुदाई बसहिं लोक पूजित घटजोनी जिन को चरण पसारि सब छोनी संत हित रत अनुसा
न धु विज्ञांनी भक्ति निरत मन क्रम वानी इहां करवसे वहिं वनवासा जिन को संग लहि भरवउ लखा
सा सेवत सुर मुनि नियत अहारा मुनि अगस्ति जहं तेज अगारा सठ पापी रिपु मिथ्यावादी
कूर कुचाली अरु उन्मादी जिय तिनयें यदि आश्रम माही अलरइ ताकि सकत इन नाही वस ७
हिं जे इत वंदित फल पावहिं फूले फूरे सुनत हरि छवि हावहिं तेहिं गये सुतीछन हरष सों जहं वै
टे मुनिराइ रामचंद्र आरपहिं केरत सुनत हिं सिष समुदाइ चौपाई जाहि पद रामागमन जनायो

अँनुज २

सुनि अगस्ति अँनुपम सुष पायो सिष्यंन सहित तन तन चलि आये राम हिं लषि नैनन जल छाये सी
तां सहित सुष धाम मनि दिनि रषि विधि कियें दंड प्रनाम मुनि उर हरि अंक लगायो सुष अँवो
धि हरि ओरि न लायो पुलकित तन आश्रम लै आये तहँ सुंदर आसन वैठाये विविधि भाँति पु
नि पूजँन कीन्हो कंद मूल फल भोजन दीन्हो वैठे पुनि ये कांन तहिं जाई मुनि सीताराम धु वरान्
न भारे वोले उ मुनितें होउ करजोरे राम प्रेम सो नैनन चोरे दोहा जगमारन वडु काल ने तव
अवतार हिं जानि यर विरत्यो प्रभु आगमन तहिं पलु अति नयठोनि चौपाई जगत आ
दि तव तेज सुराती सो जब मलिन सकि कर धारी मैं आ वा ह तन तब जेतिं कापा तेहिं पुनु
प्रहिं मै होमिन माया महतत्व तातें है थापो तेहिं ते अहंकार पुनि भयो महतत्व मिलि हि मो
अहंकार सत रज तामस सौ तीनि प्रकारी तामस ते सुछम भे भूता राजस गो सत मन सुर पूता
लिंग भयो तिनहुँ मिलि व्यापक तेहिं ते भो विराट जग व्यापक काल कर्म के मत ते सव भये ति
र जग जीव देव नर दये सुछम तो रज ने मक हुं धारी प्रगट भये हरि विधि त्रिपुरारी दोहा पा
लन उतपति प्रलय करत्व सतो नीनि जग नीस जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति उ तिन ली के परेस चौपाः

आरं:
२

साद्दिचितमय औ अविनासी सबकोनबपरकासप्रकासी सांमी है सरूपतुवं माया विद्या
विद्या वेस्वताया जगत अविद्याप्रचनकरावै विद्या जीवंनि निवितलगावै जीव अविद्या
वससंसारी विद्यावसनितमुक्तविचारी जेहिं वे संतविचाररिंभावै विद्याताके उरबर आ
वै नवधाभगतिजिंनेकरिसेवा जपितेंवंमनवतिंजोनहिंभेवा तिनकहंमुक्तिसुलभ अति
अहंई विनाभगतितुवंकोउनहिंलहंई केंहंलगिकहनउपायेंनरहै अनुसारेसपरमभे
कहैं तेता मुक्तिहेतसतसंगहै मिलहिजोयहिविधिसाधु संतनसंतरहाररहितसंभचितभजे
न अगाधु ३ चौपाई विगतवासनारहेहिं असंगा येंमविरतकिपकमंहिंनंगा संम आहिके
पुनधारनकीन्ह स्वबसफिरहिंनवपदचितहीनेइनकौसंगकरैजोकोई तेहिंहरिकृपाल
नतरतिसोई पुनितवभक्तिहेतभगवांना मोहमार्गबरहोतविज्ञाना तातें उपजतिसुनहुदेव २
रारी प्रेमलक्षनाभगतितिहारी जीवंनफलरधुबरसतिसोई संगजोनवभगतनकरसोई
मेरोजन्मसुफललभा आजु पूजेमनबांछितसबकाजु तबतैंनेनयहदपउमतिसोरे जयतप
मघसबसुफलतेंमारे तेता सोवतजागनसपनहूंवै ठतचपलवताल रहहुसंतमममन

वसेसि पारामसुसकान चौपाई मीसुजीनसंमजारसंचारी मनिमैमुठिकोसनरखारी
सारंगधनुषुनिदिपसुनिरामहिं ऋहैतुनीरहनि चमिरामहिं कह्योमुनीसमहेरस
सारा मेजहुराम वेगिमनुमारा पंचवटीरह्योनेजगमोजेन गोतवीतरसुठिहदरव
प्र न कौननवासस्सेतहकरिये नहनेसुरमनिजननहुघहरिये रामलषनसुनिहरषितमले
सियासहितवननिरखतचले मारगमहंपंकगिहुहिदेखो विसमितसैलाक्रिजसंम
लेषो चलितुमकोंपुछ्योरघुराई कहेउजराइउ ऋतिहरखाई सोरठा चिरंजीवहे
रम मैनउपितकोंप्रियसघा मोरजटाईनाम सिरसुवुहे आवहुनिकट चौपाई पितुसें
ममानिनिकरनेहिंगये रामघुनामकरतपुनिमये हे आसिषनवकहयोजटाई वसि
होपंचवटीमहंजाई जवजेहोहेउवंधुसिकारे तवरैहोंजानकीनिहारे कह्योरामसु
निमुसुमसकाना नेसरिकरिये चालिसंगनाना दुखिवहुनसवैनियरेहीं नहर्ईनेनाक ग
ववेहीं पुनि आगेकरंकीनपयान पंचवटीनिरख्योमनजानू लखनकरेषायरपं
चवटीहे फूलेविटपनलतनसरीहै संघनपंचवटवरनरहै सोहै पंचकुंडनिरसनम

आरं:
८

नमो देव विरची अनुपम लखे न तर चरन कुटी अभिराम अमित सीय रघुनाथ के कारन
रेत विश्राम २३ चौपाई गो सवर्ति जरे लखन तरंगिनि अधम उक्के पुरुष गरभ वंगिनि
बैठे चरन कुटी तहँ जाई अमन वारि सिय अति सुखपाई राम हिं निरखि अति हि अनुरागी
करि यन नाम गुन चरनन लागी तेहि तुम सुर नर सब अवतारन तुम हि सकल जगत के कारन
तुम रवि के जे जगत विगसावेन नाथ तुम्हे सब जगत न सोवन जगजल निधि उअरन को
हेनावे अब रीस सोल धोय भावे नव प्रकास जे हिं उर महँ सोवै ताको संभ्रम तिमिर हियो
वै चल का मांहि के करि हरि जोरे मम अधा राम तन लं घर सोई देव बल दल वडन वर
मग्न मुवं चैन अगोचर रूप अस कहि सी ना छ विरही लखि छ विछ लक चैन प सोरठा
लखें न सीय अनुराम वसे तसं अति मोद सों आश्रम अति अभिराम तेहिं वरनन को २
दु करत से २५ चौपाई सहित कपोल उ सहिं तन कैसे रविन मवहि के धूम हि सो से किस
ले सो तहिं विरचा विसाले कोमल अमल लित चतिसा ले सिय कर जो चरन ने छवि म
रे चरसन सो जेतु तिनम रहं वरी उने तन लहे समने समना रा इरहर दतरे जेन अधिपारा

नर

गुंजहिंभौंरउलूकैनकीधुनि निसासमैवनकरहलिसकविगुनि करिकलमननकरमार्दितचं
दन सुरवनपरसन्नोसुगंधन सुकनरलितलसिमदूवमहिं ललितलतावितुमधि
विरहीं पुंगीनागवेलिसोमंडित औररूलतावितानअवंडित सोरठा वनश्रीकेजंनु
चैंन वनेसुगंधितकुसुमजुत बोलहिंमरिउरचैन मधुकरकोकिलअवलितरं ३६
चौपाई वेतलताजुतवनअतिदुरगंम सोहिरह्योसोतुजहारसम राजिरहीचमरिन
केचमरन चरहिंजुगाकरिकरिनगडहरेन विहरहिंतहांहरिनसमुदाई कैंअटवी
केराजसोहाई स्यांमततमालवसहिंसुखकारे जेंनुनारायनवहुतनधारे कपिसंजुत
नरसोहततीको धुंज अरजुनरथकेजनुठीके यहिंविधिसोभितवनचहुंवोरा
जहंतहंनाचिरहेवहुमोरा जलथलमलसिकारसुपासु तहांकीनरघुवरसुषवासु
वनहिंविहारकरहिंमनभाये वरषहुकतहंकालविताये दोहा येकसमैहरिरघ
सोजोगवरिकेतीर सोभितसीतालषनजुतबैठेआसनवीर ३७ चौपाई निरषिरामकु
षअतिसुषछाये लषनजोरिकरपूंछनभये मायाजीवरेसकरजेहा कहियनाथमत

आरं:
१०

जोगन बेद विरति नहि अरु ज्ञान विज्ञाना यह प्रेम रस एक रहु सुजाना सुनि हरषित बोले रघुनं
दन सुनहु मेरे कृपा कानन चंदन संतन औ असन विलहन माया अहै अनादि वपु है रर
साया विधा वहुरि अविधा ते ह येक अवेद येक मैं ह नितानंद ज्ञान गुन जोई चितअ
उज्ञान सहय विसोई अहर अमाय करे सार असा जनन मरन विन वेद प्रसंसा होत सु
हु जीव को रूप रंमि जानै कियो विचार नासु सहीन भेद अव भवन तुह सो सुनहु प्रकार सदि
न अविद्या वहु है विधा सति तम गुन मन को रिकृहं रि वि चारि बुध सहित अनैं हंत्स व हु अ — हत गुन
उबहु उ विबई जिन मर्द कबहू म तिन अहर हेत आतमा आनम है हू गुनि असंत उ अनि
तै को हू कोरि कुनत के उपदेस नमाने जिनके हैं निन्द्य वह उपजाने सिल्ल भलु बतन जी
वजे है हरि जि यद्य के तिन ज्ञान न तने है नेई जन जिन वह कुरावै जरि सन संगति कर
नुरिजावै कोरि मन चारै रिं दिवि सुख जेई सुनहु उ बेन रे है विवई नेई कोसिय मल चारि १०
परकार दृढ मति चारै दृढ़ रै स विचारा कोउ कर्म मिश्रा भक्ति मारग रैस कहं अव
राधही कोउ विरति मिश्रा भक्ति मागी साधना बहु साधहीं कोउ ज्ञान मिश्रा भक्ति सो

परब्रंम्हकोजोंनाचतहै कोउसुधमतिहिहिं आसरैहै मालिनतामनकी रहैं ॥४६॥ तेता येई
फलजवलहतहै येमीतोहिं अकाम नेईचारिउमक्रोतिहैं रखिनवरसोराम ॥४७॥
सोरामभुनिसुनहु अवमकृतनहूंनेमेर भक्तिचहरिकेवल्यपुनिनित्यमुक्तअंतवे ॥४१
चौपाई जेकारिभजंनमुक्तिसुमनलहै जिनकूंरमक्तिजीवकविकृते दुरतिंजगतेरैसुन
पावंति नरिप्रकासकेवल्यकहेंतेचति चारतिं जातिंजेईममसंगा रहतसेसउरप्रेम
अभंगा नितमुक्तितेजीवंनजानो भारईअपनेसमतिनमानो सुनहुंजेसेषअवतारहुअरे
ईसरैसजंनमहंनहिरहै ममतंघाविषयनिअंनरागा करिहैखरकामादिविभागा हिंसा
पेट्टचंचलतारई भ्रमअसत्यरत्ताप्रनिगारई आसक्तताअउविस्वविलासा विषमवु
धिजुततेसप्रकासा जेगुनसोसिंनुजीवमहंहोहिं ईस्वरमांहि जिनबिनजांनेकोउकहेहि हि२
ईस्वरजीवहुकाहि ॥४८॥ चौपाई सहंअविंतैसलिमसाई कोरिनविस्वनव्यापकताई
सवतेनरहतिजगतिरवसोताई सवअवतारनकारंनताई आनमरामहुमनहरिजीवो अ

आरं: तुलितप्रेमजननकहंहीयो बहुविधि ब्रंनयमलीलनिकरिबो सुमिरनहीत्रैनायनिरुरिबो जो
२१ सुतयलविजइहेजाबै चेतेनगतिकिमिपरनिसुनावै येगुनकहंतेहमतिमरवेस सुनहु
विमलवैराग्य ग्यतिमेस इंद्रिनमनवकहुं चैनजेतो कहि पेतानविरागीतेहीं चारिभेदति
नकेयेजानो कैमननेमेसं छपबखानो सोरठा हेप्रथमहिंजेतमान व्यतिरेकहु यकईद्रियह
वसीकारकहंजान विरतिविरागीमेहये चौपाई समदम आदिकमहंश्रमकरिकै भजिहैं
हरिमनसुधुनिहरिकै करिआरंभजतनमानकहावै दिनदिनविमलविरागबढावै निजहेत
नवेहेहवृंदहे वुधव्यतिरेकविरतितेहिंकहे बीनवासनासोउधरतिनिज एकइंद्रीसो
विरतिजननरहिन वसीकारजेहिं विरतिविसोका सोनहिंचारनसुखवैलोका साधन
भेतिसुनहु अबजेतो करिसंदेयकहत हैनेतो इंद्रिनकरिजेसाधनकरियै साधनभक्ति २१
तिनतिंउच्चरियै भाईतिनकीहैविधिजानो वैधीरागानुगावखानो दोहा विधितेजो
वैधीकहीरागजमिलितविधिहोइ कहंहिनाहिरागानुगा कविकोविदसबकोइ ३४ चौ०
भागनजोअनुरागहियहोई (कतहुंहैनाहि) विनहुंविरति अधिकारीसोई साधनिपुनमेहिजु

क्तिप्रवीने अकछुदृढविस्वासहिकीन्हें तिनहिंजुनीउत्तम अधिकारी अवमध्यम अधिकारवि
चारी निपुननसास्त्रहिंसरधाकियें दृढविस्वासगहेजेहियें सोतिकिष्टजेहिंसरधानाहीं
देषीसुनीभगतिजेहिंमोहीं तिजमननजे अपस्मनदेषी नाहिं अधम अधिकारीलेषी जे
हिंपरदृढवैमनक्तेभगवान चाहेंदुमहंसोप्रेमहिंजांना साधनभक्तिसहित अधिकारी कहेंउ
कछुकसंछेपविचारी दोहा सुनहुभक्तिके अंग अबतिनकेबहुतप्रकार मुख्यमुख्यमेकहत
तहोंजेसतग्रंथनिसार ४५ चौपाई प्रथमहिंहैसतगुरकोपाउब तिहिंदृढविस्वासबढा
उब पुनिसतगुरकीसेवाकरिबो साधुनमारगमांहविचरिबो धर्मभागवतमहं अनुरा
गा अनुसववविसयंनभोगहित्यागा भाजनभावचाहउरधरिबो तेहुमहंमहोकपिनता
करिबो विधिवानहरितीरथनिपयांना आंपेहरिबासरसनमाना घडदस्त अमतानु
ठसिहिंमनिबो हरिविमुषंनकोसंगनठनिबो करवनहींसिष्यनसमुदाई करिबोनहिंजे
हिंमहंकछुजाई रहिबोवरजितव्यापारा करवनबहुग्रंथनिअभ्यासहिं दोहा रहव
रचातुरीनहिं बिनसहितसांतिविनसोक सबदेवन आदरकरवजनप्रिपविचरनलोक ४६

आरं:
चौ: सेवा औरनाम अपरधन रसखुवंचासें साधवसाधंन निंदाहरिहरहरिभगतनकी सुनन
१२ नसरवरीतिपरजंनकी सकलवैस्नवविंरसलिखवतन पहिरवनिरमायलेमुदितमंन ना
चवगाउववाजवजाउव ईसहिंकहिंरहेयतहिआउव तरिलविठुठवचलवरहियांछं अर
चैंनपरहहिनजुन आछें सेवाहिरंनकहिसुखछाउव जषविनती अलतवसमगाउव षावप्र
सादपिप्रवचरनोदक संषवधूपहिंजनहिंविनोदक मरतिहरसपरसिसुखछाउव करिनीराजन
वाजवजाउव सेतसुननरसवसहरिकीरतंनकियेंकृपाकी आस गुंनसुमिरवहरिध्यानधुरिमा
नवनिजजियहास ४७ चौपाई रंगवविनोदंनसषाभाउसो आनमअरपंनकरवचाउसों जो
आपनेकहुंवस्तुपियारी सोउअरपंनकरवसुषारी करिवोसिगरेहमरेहिंहेता रहिवोसर १२
वरिसेलनिकेता मनसंबंधिनसेवाकरिवो विमयउचितउत्सवअनुसरिवो कातिकमाघ
सोमाधवमासा सविधिनहैवोअनुठपवासा करिमूरतिपरअतप्रीती सादरसुनवभाग
वतरीती करवसुंजोंतिनसंगअभिराम वसिहरिधांमनजपवहरिनाम तानप्रकारसुनहं अ
वमाई जातेसवभ्रमतमभिटिजाई सेता यहिविधिसाधनकरहिंजविरिंयेसेरनवजांन सो

उभय हानि नसै सो एक करि बैनी सुनहु सुजान ४८ चौपाई अब हमि तन मन बुधि प्रान सरीरा इन तें भिन्न
जीव गुन धीरा जगत अवर सत सन जीव हि जाने यह बिचार हि ज्ञान हु जाने करि निश्चै अनन्य
रजव लीवै जग महं पर आतम कहं जोवै निद्रा आदि जाग्रत अंता यह त्रि सनि रहै सवंता
सो अनुभव स्वरूप हि लखि प्रकासा नव भव भै दुःख जबै मन नासा यह बिज्ञान मनि जैन जोरि मा
वै सुनहु प्रेम जे हि बिधि उपजावै भये बिज्ञान प्रकृति छुटि जावै परा भक्ति उर अंतर आवै ज्ञान
रमै है तब ते हिं पाई जस भै तस सो जानन जाई तासु मोम हं अनुपम प्रेम जो परा कसा वृत्ति सोई
प्रविस हि है या हि वृत्ति सुख वृत्ति रस रूपा होइ ४९ अखंड न कसो भव बहूर जब मोर हि तिन को नास
पुनि वृत्ति मि कारि तुव बपु लखत न कहि पे कपा निवास प्रथम करजब जग दूर भो तय मन चिंत समे
त परम प्रकासी सक्ति निजन तन ताको मैं हेत ५० चौपाई बिन हुं बिज्ञान प्रेम उर होई अबतन जी
व कारि साधन सोई कैसन ईस कृपा ते पावै वैसन कर्म पूर्व तें आवै सुनहु भक्ति मरंजे गु
न आवै करि बिचार श्रुति सज्जन कहै यों चौपे से सकल निसोइ हो रहु भगन उ है कारनि हि पर
ति कारने मो हल लघु परम सुतं तै भव दुःख बंधन सज्जन न जंवै धन आनंद हि हिं सार बर खंती

श्रार॰ बसिकरतेंमरेलषकरषेंनी लछिमनसुनिश्रानंद श्रतिछाये बहरिकुटीनीतिउअनश्राये बसिदंडक
१३ बनश्रतिसुषपावेंहिं केरमूलफलसुषनले श्रावेहिं दोहा जागिरैनचौकीकरेलछिमनधनुष
चढाइ परनसेजमरेंरामसियसोवहिंसुषसरसाइ चौपाई होउबंधुधरेंधनुबाना जोगावहिसरि
जाइंनहींना मछिसियासोहतिश्रतिकैसी सुषसिंगारमढिछविजैसी लछिमनसीसप्रेमरेहु
लास कियेविविधिविधिविविधिविलास एकसमैश्राश्रमश्रभिराम प्रियाश्रेनुजजुतवैठेरा
म श्रतिबलबाणिकलितश्रविवेका विहरतबनहिनिसाचरिएका रावनभगिनिसुपनषाना
मा श्राइगौतमीतटश्रभिरामा चरनचिन्हकीलहिरतारे निरषतउतकेहितठिंगश्राई सीय
सहितनिरषेउहेउभाई छविसीवासुषजनकुमराई दोहा भईकामकेविवससो छकिछकि
देषश्रनप नेहिंछनसुरनमरेसहिंगनितिसिचरितमहेहप २३ चौपाई लषपरामरसुषितिसि
चारी हरिलबुउदरउदरपहिंग्यारी नलिननैनप्रभुपतिंदृगकूरे हरिकचस्यामबारपहिंमूरे १३
हरिप्रियरूपदेहेंपलिंबोरा रामवैनाप्रियपाटिकठोरा सियपियपनसुनरहिसश्रहरेहरिजुत
न्याउकुटिलउपरमहरे श्राइश्रपनोरूपठपारे कलाकरतिथोदेवहुमारे सोतासिकरकोतुम

केहिं कारन नरवपु जरामुकुर कर धारन फिरहु वन हिंजरँ असुर अलेषा लिये संग नियसुंदर वेषा
सरलसुभाव राम तव केहेउ तेहिं उरपुनिपुंनि मनिसिज हेउ दोहा कांमरुपिनी सुंदरी वलअस
वकलनि आगार अरहिं निचरिन मरहं वडी अस मन करत विचार ४४ चोपाई कह्यो रहांकेहि
कारन आई कहहु तुमहें निज चरित वुझाई एवनवरिहिं निसुपनषानामा कांमरुपिनी अति
अभिरामा निज वरु फिरउं अकेली वनमैं तुम सुंदर ऐचे मो मनमै मोलेम नारि न तुम सम नाप र
क परसंजोग रच्यो विधि जोय एकमै तुंवं वंधु नारि कहं षाई फिर सोंवन तुवं संग सुख पाई क
ह्यो राम सुनि विहंसि निहारी लगहंमारे अति प्रिय नारी सुंदर सीलवांन मम भाई नासु वि
वाह करव तुम जाई कांमातुर लछिमन पहं गई वहु समुझाइ रकहन सो भई सोरठा फिरे
प्रभुहिं परिहास कामातुर परनिसिचरी आई अव मो पास असगुंनि हंसि वोले लषंन
४५ छंद मैं अरहहुं उन करत सनहं केहिं भांति तुम सुख पाइहौ फिरि जाहु सुंदरि पुनहि केव
रिहैं जवहिं समुझाइहौ तवगई कहि विनरह चित वांनी वांन सिपर रति भई हरि अंनजसो
हसपेन सो लषि निकट सीता भय दई सोरठा कुपित राम रुष जांनि चलि आपे लछिमन तरत

अरं: उसीं मसा वलवान किये परम विकराल वपु चौपाई कुच हीर वस्तो कीइ वृंदेखे तेउ नितंव गि
१४ रिवर सम लेखे नाक दरउ री सम्भुव मारे राजें अधर समान अंगारे कमठी सम सो हति जे हि
तेठी नासी पीठि सरिस है पीठी कच हेम सायरा है कैसे सो सनउ दर मृदंग जरिंजे से करिसीं
नी है ऊंट हिये कैसी लंबी ग्रीवं ऊसति है तैसी जे हिं धुनि गरदभ धुनि हिं लजावति चौंडर सांड
सस्तों सजे हिं आवति नाम सरिस नहीं जेहिं केरे षो हे समनतें हिं कान चउरे कोधित लषन यार
वड जंटी असि तें लिप श्रुति नासा काटी सोरठा लछिमन कोप कसान निसिचर वंध आरंभ
मष रहत निनासिका कान सरुज भ्रवा रोदन रिचा चौपाई छूटे व्याकुल भागन भई अवन रु
घिर सोवर घलं जई जेहिं आगें रोवन गिरि परी दूटे केस रुधिर जभरी पूछ्यो वर कर धीरज
धरे को किय अैसी दसा तुहारी करथरि नहर कौन जगा यो का के काल सीस पर आयो
सुरय ति जुन सब लोक पजेऊ वल जुत दैत्य समूह जेतेऊ सकहिं न रहि सग्राम हमारो सो को १४
किय असहाल तुम्हारो सुर मुनि असुर दैत्य सब कोई मरिहों रन सुरपति जो होई वोली रा
कसि वंधु वचन सुनि राम वंधु चल हि है मोरे गुनि होरा सुंदर अति बला वान जग वंधु तरु

नसकुमार तापसवेषतिंधर्मव्रत अस्त्र निसस्त्र अगार चौपाई दसरथसुत रहेते जहि धामै ति
नके राम लषन अस नामै अति सेवो जल ष्यो उनमारी तेनके संमसुर असुर बहु नाहीं हैय
कसंग सुंदरी नारी तिन कि पय पेसी दसानन मारी सनन को पि घर करधनु तोस्यो चौर ऐर जुष्य
पसों असवोल्यो आवहु मारि मगि नि अपकारी सनन तै चले सहाय सव धारी पंचवटी सुष
नसा आई असुर निहिर देषा रहेउ भाई तेउ छकि रहे सरूप निहारी तेरि अंतर असव क
स्यो षरारी सजुग जामक्रिडि रहडु भाई जव लगि मारडे षलसमुहाई छंद रघुनाथ धनुष च
ढाइ चलि निसिचर नहि जिआउ गये अस कस्यो रंमहै रामनाम कमान वंस रहिं मरहंमये तिय
संग लै फल मूल भोजन करत वन में रहे फिरत हैं करि संग तपासि न धनुष सर धरि न्साइ रघु
२ रमनि तैहैं ते सारिषि अपकारी नीच तउ मजैहै जो नरिंमाहि तो सव गिरिहै समर मरि
जिहै सर उर लागि चौपाई तिन कहु करिवह सरन पधारे तिल प्रमान प्रभु काटि निवारे
पुनि हरि हसि निज चो दृह वाना दरसे चोर ऐर जुष्य पथाना सपन घाजैं न यान हि गरे घर
सो सवे सु नाचति मरें करि वल गनाच स्यो रल साजी अगनित संग मर रथ गज वाजी

आर.

१५ चौतरसरसवलीयरजोधा चले आयुधन धरिकरि क्रोधा चढरि पेकपेखंनने आगे उद्दअनं
हरिमरसवृपागे अलगुंन अमित सोहिते रिंकाल्पा गनेनसरविक्रमी विसालक्ष करतनम
घोयेका करिसकरी ममरनजुरतलोकपहुजकुली तेरा करउसघपृहसमीसकीधरलेसकु
लसरपोक चाहेमी चहुकालहतिहुसीकरउंसवलोक चौपाई मोसमवलीवासवहुनां
ली कहहुमनुजकेरिलेखेमांसी सुनिगरजनसव असुरनिआंनी हरषितवलीवीररसठं
नी सरसुनिसिद्धलषेरंन आपे सवेरामजेमुहितमनाये त्रिसिरा अस्पूलाहवमापी
मताकपालहुसंगवहुसाथी दूषनसंगसारउलचले सवैजुद्धउत्साहितमले सोमितभट
पेषरसंगमांसी जिनहियकुचहुंयीठिरनजासी प्रथुस्याम अनुसेनागांमी अउमवसत
लिहंगमनामी परवीराहपरुष अउहुरजे कालकमुखहुवोजजंतसुरजे तेरा मेघमा १५
लिमरंमालि और धिरासनहुंवरासि सरसंगपेतासमसुभटचलेयोररसरासि चौपः
गरजंनिघोरसहुरणचाका धजअवलोनमसमहिवलाका गैवंनवेगसोरथवंनप्रवे
ड अरिधरितमनोमअखंड चारुअमलअतिआयुधचमके तेहजंनचहुंदिसिहंमिने

दूमवैं पाहि विधि चली निसाचर अनी ग्रलै मेघ संम धुमडी घनी कह्यो अनुज सों एमसु
जांना ल्यावहु वेगि तान नैंन चाना होहि मरुउ नपात भ पावैंन सुरंन सुघर अस्तुरंन उरपा
वैंनु देषहु लषंन रहिनहिं घोरा विना वादि है गरजन कठोरा सरसधु मनरकसकसमस
तैं चांयथतिं चापकर कनल ससरी देहा कुजहिं जेपे विहंग गंन कै हैं दिघोर संग्राम परकन
रहिनवां रुमम जुकिहै निसिचर ग्राम चोपारे नयमुष अतिप्रसंन्न मे दषौं मातें निजजप
निंहचै लैषौं जघपि समर पतु मजीनें नकुहैं नहं पिसियहिं लै जाहु गुसामहैं गरजें निनि
सिचर घोर कठोरा सुनि पतमेरि निसांन निसोरा मसीं चलैं युहल्लेन लरारै अस कहि नि
जयर स्यौं रघुराई लछिमन सिय हरिं हरि लै गये हरि निज धनु वचतावनमये कवच यारे
रितरकस कटि वाघे सोहैं हिंसोन युघस रकांधे केम्मर कासिसिर जटा सुधारे विचविच
सुमनन कली सवारे नमसुरमनि सुस्तेन हिंयहे लषि रधुवर मुष अतिसुषम है छं० प
विद्धकाहिं यठि सुस्तेनयुं निलषि माधुरी असकहनरे रिपुसरस चोरत वली अजिरधुना
थये कहिं उघनरैं कहै राम कोमल गात कहें पवि कठिन अंग निसाचर कैहिं भांतिये

आरं: अवकरारि जो संग्राम परम भयंकरा सोरठा पुनि निज नयन प्रमाण लष्यो सरित हरि वीररस
गहे चाह समर चाय कालहुं काले हहुं जेन चौ० नव सव देवनं की भै गई रामचंद्र नरजितत्रे
१९ उयम भई भीम सो रजन सेना आई सगम रग चहुं दिसि गयें पराई चपत र जेन माधि स्सर
पत्ताला जिमि तम बीच अनल की ज्वाला लषहिं राम निसिचर दल कैसें करि नजुथ
पंचानन जैसें पुनि कठोर कोदंड कोरा रह्यो भुवन नै भरि सो सोरा लषेंन रघ धनुज
तदल कैसे तरनि उदे घन मंडल जैसे लखि माधि सेन राम धनुधारी घर सारथि सो कस्यो
निसारी रघुवर सन मुष कहहु रथ मेरो सो अति तरल तुरंग नि येरो छंद सव समाचिव घरहिं
निवारि रंगि रंन रंग अति आतुर चले घरन है ने वहु सरय चारे चलेन भमार जमले यक १९
कारसव निश्रसर कीन्हे विविधि आयुध को यनें पुनि थिले सय गए चठे जो नन प्रलं सघ
२ नेसम चौयते तेला संघर षासो वुंदल म गरजनि गरजें निधोर चाय पीठिजेन चंचला
चमकि रही चहुं वोर सोरठा तेन वदल म धिराम सोतिरहे सारंग धरि जैन संकर आमि
राम लसहिं य हसघहिं गंजनम धि छंद हरि मुदे सवल्भु प्रसार जिमि तरनि उदे निहार लषि

१८

छं॰ पेलप्रमउतर लरकौंनलसाकार रजैंधिरसोंरामजैंनपुत्रातरविअभिराम सुरसनैलषिप्रभुजं
ग टंकोरकिमसारंग जिमिविधुनष्टिनप्रवार रंभिलीनसरसउमार पुनितजेनिजसर
गाल तेचलेजनुवहुव्याल फिरिचपलगतिचहुं वोर सरतजनतराजकिसोर सरव
ठेल्हपरमप्रचंड मंडलमप्पोकोदंड दोहा सरषेवतनजोरतमजननलषतनकोउरनधीर
लषहिमंडलाकारधनुलषिनपरतरघुवीर चौपाई केकपत्तरघुवरसरचले विपु
लदैतनदैनकेदलदले कालदंडसमसरसिरधाये रतेनपुंषआनितोषचनाये निसरिनि
कवि सिचरननैंजाहीं सिषीसिषासमओमसोहीं धनुधजानधुजचर्मसपोना वांटेंसभू
षैनवरमनिसाना पाइेंनतरंगनरथगजसुंडन उरऊरुकोरवहुमुंडन लजेनलोकन
ताचविकरनी घलमुत्तरेचठेसरतरनी हरिसरविकलसेनभैंमागी वनजिमिराजि प
मिमधिचहुंदिसिआगी जेकरकारिप्रसारवलडांरहि सिरकरकाटिसषातिनका
टहिं छं॰ वहुकुंडगजविनसुंडसुंडप्रचंडनरंधावनभये कोदंडधुनिआनिचंडसुनि
हरमंडहितआवनभये वेतालजोगिनिभूतनाचहिंतालदैहरषितहिये कालीक

श्रीरा॰ एल उ माल धा ज्ञन खड्ग सपर करालिए दोहा भयउ तिहुँ बलहँ न शेष खल गे बरढि गस त्रु भागि ल
१७ बिदूषैन उर बढ़ति भै परम कोप की आगि छंद ॐ निमा सुसंग फिरि चले बीर गहि सूल शक्ति अ
सि धेनु षभीर पाषान साल परिस हपास षल चर बिसल्व मय कियत्र का स त्रु नि त्रं ध
कार मो तु मुल ज्ड तव न जे राम सर पर म कुंड सिसि विचि सि मठे हरि बिरासि बान तेहिं
समै न रह सै परहिं मान सब लगे हि जॉन हिं बान चरइ नहि लखन चला वहिं न पति ने र
सब स त्रु काटि निसिचर न मेरि सर निसरि मॉहिं छिति छरि छरि छंद बरधार कर उहा
र त्रु गिनि नधार सर धनु ने कठे निसिचर नि कर करक रहित बहुंन रट हिरैन त्रा नं रव
रे करि गिरि सिर कहुं नाक उर करि उरर उर कोन रे गजतुरि नहुंडडमुंड र रहन हुं चरन
कारे बान ते सोरठा कियो जुद्ध संमि राम रन त्र गन त्रंगन छबो विधि सा ला त्र मि
राम जगत बने ते कीमन हुं चौपाई कोपित रंन मथि रधुवर त्रै से नपत मियु नगत
हु बैंन जैसे पांच र जार त्रजेम रमारी पर पोत तरत पुसं सिपु चारी ते सब रामहिं नि
राषि त्र मर से पहि सलसि नाइ म व र षे हरि हैसि सकल त्रापु धन कारे म रिन त्र ७

नेकभुजासिरछांडे ॥ दुखंननिरषिविपिननिजसैना धायोलहंनयोजनतचैना निजसररथुव
रसरननिवारी लियोभुजहिनिजसक्तिनमारी हरिसरकारिताखंडनकाटयो दीनिसत
सिरपुनिरघुछांटयो तुरतदुसरेरथचढिधायो निधकेरघुवरसनमुखआयो ॥ छं॰ ॥ फि
रिनीनसररसरितजेरघुवंधनुषरतिलनहिंगये लैपरेधधायोक्रोधसोसोरामसोउकार
तभये जगवानसोविनवांहु किय पुनि प्रानविनसोमहिपन्यो लषिरामवांनप्रतापभा
री दैत्यदलजेजेकन्यो देखा वैसेनापतिसबधरि कोपितधीरतकाल ॥ अस्तुतिप्रमा
थिरुधायोमहाकपाल चौपाई तिनकेरामचलतिपइसंवीन्हे सरवरषाकरिपुंजंन
कीन्हे कारयोमहाकपालकपारा वहुसरहंनिप्रमारिमषिडारा अस्तुलासउत्तम
रितीरा पंचसजारसंनेउयपुनिवीरा सरपुनिचारसमरनिप्रचारे धायेतेवहआयुधधा
रे लियेधारिसरवरषाकीन्हे निजसरराम काटिसरलीन्हे वरलैकेसिरवरहेवानै
काटेसरिसुरकरैवषानै पुनिकोपितधायेसततनिसिचर सवकिपरामतिनहिंहनि
सोसर वांनसजारसिंहनेसजारा अनिननरेसहसेवहुधारा ॥ छं॰ ॥ नेसिरुधिरसरितासि

आर:
१८

ड़ारकै सरिके कपि भूपनपरे उठउ कुल मारी ड़ीलनिसिचर अग्रज रूषमकरहिं मरे कौड़हिं
न हंहिं षची सजो गिनि गिड़ तट आनंनिगरे जन चोंयसो सेलवार अगनित षेलित
रवंसीर रहे होत मजाग हरहिं कुंड बड़ करर रहिं धाय लवीर नरकसरि सतहंकी अवैंनिज
धकरि कियउ रघुबीर सोरठा सो भासिंधु अपार धनुष धरे संग्राम मैं एक राम सुकुमार
मारे चौदस सहस भट चौपाई उठे तौ निरहे रन माहीं रघुवर ति सिर षरअसनाहीं निरषि
राम वलषर सम संना रोके उति सिर अतिबल बाना रेषउ मेरष्यार अवधारउ रे
न मह राजकुमार हि मारउ मो हिं फिरे तुम जुहिं करियो जीत मंसा आनं रउर भरियो
षर प्रेरित सों को धित धायो रथ यर गिरि विष्क्रिंगर रूंसायो गरजि वानवर षंन वड़की
न्हो हरियनु धरि आगे चलि लीन्हो करहिं जद हेउ वड़ विधि चोंनन मानहुं त्रिपुर अ १८
सुरपंचानन उसारहित तिसि हार रघुनंदन करहिं विविधि मंडलरंन अंगन छद से
उलरहिं अतिबल बान बान अने केन मंडल भट सुरहंन हितकित वि मरम आनंन
वीरताये रंजवटे विसितरंनै नैनी रतिन की फोक हरि मालहिं लसे जंजनी लगिरिके

पायेंन ञ्रपरहँहिं प्रवंगमजातिसुभायेंन लंकहिंक हहुं उषारिलेआऊं कहहुं रीपजुतसिंधुडु
बांऊ सोषहुंक हहुं उदधिकोवारी पाटहुं मेरुआदिगिरिडारी टारिदसाननवदनलेआऊं
पउमप्रहुपसंमप्रभुहिंचढाऊं गहिल्याऊंदसकंध अभागे वालिपछहवंराषहुंप्रभुआगें
कहहुंसीपल्याऊंरुनिनिसिचर कहहुंषवालिलेआऊंहाधर जोमवंतकहंतुमसबलायक कीन्हें
उसोइजोकहरघुनायक छंद सुनिवचंनहरजिनकपिनजेसोंजीरपरवजपरगयो लहिंभीमक
पिकोभूरिभारा भूधरहुंकंपितभयो अतितेजवंतहिं अहनमुषचंनषंनलगंरविराजई जनु
उदेगिरियरउदेरविरथजुतपताकहिंछाजई १२७ दोहा जैजैजैहंनुमंतकीकहहिं वरषिसुर
फूल वहंनलग्योंहरषितहियेंत्रिविधवायुअंनकूल १२८ रामलषनअरुजांनुकीसदांकरहिं
कल्यांन तेहिभयकवहुंनहोतिहैजोसुमिरहिंहंनुमान १२९ सोरठा लषंनजांनुकीराम सदां
वसहुंममसनअयंन अतिदयालसषधांम करहुंपारभवसिंधुतें १३० इतिकिष्किंधाकांडस
मापमश्रीमहाराजकुमारश्रीवाबूसाहेवविश्वनाथसिंहजूदेवकृतसंपूर्नेंभाद्रसुदि ६ सं०१९०४

कोपवज्रतिनमार्यो भगनभईहंनुवांमतुम्हारी गिरेभ्रितकइवसेलमझारी लषिसनुअंगलाल
वाणीसकीन्ही सवकीसांसवंदकारिलीन्हीं दोहा सलिनब्रह्मअहविस्तुतिवऔएविकलस
वदेव नुवंसमीपआवतमयेजांनिपवंनकोभेव १२४ निजजनिजअम्रनतेंअभैकारिवंनिरि
पवरदांन न्हपजेअजरअरुअमरकारिनामकरपोहंनुमांन १२५ चौपाई पुंनिकहंरामभक्त
पहहेहै परमरजतत्रिभुवंनमहंपैहैं असकहिनिजनिजभवनहिंगए पवंनहुंहरवि
तनिजमनमये पवंनतननपंनुवंपवंनसमाना हंमतक्कुररावहुंअवप्रांना परमपए
कमकरहुंतातअव लषंनहेतउत्साहितकपिसव सुंनिहरषितउठिहंनुमतवीरा भयो
नधराकारसरीरा देत अनंदकपिनहंनुमाना पुहुंमिपरकिलंगूरजम्हांना हंनुमतपर
उरआति अंजुरगें अस्तुतिकरता सवैकपिलागे वावंनसंभवाठोवपुदेषी न्हाचरजि
तकपिमयेविसेषी दोहा कूंदिजुथ्थनतेंवीरवरहनसीसनवांइ जोरिपांनिवोलतभयोरा
मलषंनउरल्याइ १२६ चौपाई विसालताघनपलवराजें उडरविसासिप्रसूंनफलछाजें प
हनमतलनीचेमम

कि०किं०॥ जजद्दशबीशगवांस्तकहंसरभऊंजोजननीस चालिसरिषभपचासकहं गंधमादनऊंकीस १२१
२० जोजनसाठिमयंदरवुताशे सत्तरिदुविधऊंनिजजवगाशे करुहखेनमेअसीलिधेहों जांमवां
नकहंनबेजेहों हरिजबवावंनवेषधरिकीन्हों छिनिइकइसपरदक्षिनदीन्हों जराग्रसित
गोरुषमोलिमाहीं उदधिनाकिवेलायकनाहीं अंगदकह्योनाधिमेजैहों तिपफलबिअें
हीं धोनहिंऐहों जांमवंतकहंतुमहोस्वामी तुमकहपठपेजगवदनामी जदपिसमर्थअ
हऊंकपिनायक तदपिपठाउबहमेंनलायक अंगदकह्योतौंपुंनिकाकीजें फिरिअनसं
नजुनअवकरिलीजे दोहा रिक्षराजकहंविहंसिपुंनिपुत्रननेअकुलाइ कारनहारसव
काजकोंदेहैंमहीवुलाइ १२२ चौपाई अतिप्रकांनप्रभुध्यांनधरिबैठेजहंहनुमान धीरेधी
रेरिक्षपतिचलिअसकहयौसुजांन १२३ चौपाई तजनप्रान अंगदअकुलाई महावीरकासरहे
चुपाई हरसमबलअतिबुधिहंनुमाना अंगदकेसुग्रीवंसमाना महाअजैतुमपवंनकुमारा॥
रामकाजहितलियअवतारा बालकतुमफलजांनिदिनेसे धांनहेतनभकीनमवेसे निकटजा
नअनिआनपलाग्यो महावीरनवहंनतिंभाग्यो सविनऊंडरिवासवहिंप्रकाश्यो काअनि २०

दसो उतरु करि कछु करत विचार तेन आपनु जुगई सको कहे हैं अब अवतार कानन औ है नारि जु नर उर नभ्रमित भ्रमा
र चौपाई तिनकी नारि निसाचर हरि हैं तब प्रभु कपिपति मीत ठिकारि है तिनके कपि पुनि खोजन जै
हैं तेसंपानि तुम्हैं मिलि जे हैं प्रभु तिय की तुम सो सुधि पै हैं प्रसन तुम्हारि जामिन व औ है कहि अस तु
नि मोहि धीर धराये लघु करु पक्ष कोमल जनमि आए पुनि कह हनुमत देखि हौं सीता कहँ है संदेह न से ^
कौ पहमहं जासु नाम जपि अनंद अगारा जीव होत भव सागर पारा तिनके कपि हौ तुम सब ज्ञाता
पहल समुद्र है कै तिक बाना अस कहि कपिन कल्यान मनाई उड्यो गिद्धपति परम हराई दोहा ॥
गिद्धराज निज देस कहँ गयो राम उर राखि इहां कीस गन मोर सों रहे वे नइ मिभाषि चौपाई कहँ
लो याहि प्रसंसिहि भाई पानर विलीन्हें उघरा राई कहाँहिं जराय जेठ पह भ्राता नहि आव रज
नाह पह वाता सिप देखं न कार करहिं विचारा लखहिं महोदधि मरां अपारा कहँ अंगद हनुमत
बल आगर कहसों ना कि हैं को पह सागर सिप की लघि लै आवहिं जोई सब न प्रान रहाना है
सोई सुनि सब बंदर रहे तु पाई लखहिं परसपर मुख हि सकाई पुनि कहँ अंगद जेहिं बल जे
तो कहै हमारें आगें तेतो निज निज बलहिं कहँन सब लागे उहं भांतिन ते अति भय पागे दोहा ॥

किं॰कि॰ ११६ नंसेराङ्गसिनिरक्षिन सीता बैठी हैं कस अंगस भीता अंनर अगमस मुदसनजोजंन मार
१९ गपलविसरामनभोजंन हिरघहिठिगीधकी होई नानेंऊ हडं सियहिमेजोई परीपालहैं अतिवु
लराबुंन सुरहुं असुरकारमदहिंनसावुंन अतिजवअनिमतिमानहिंहोई नाकेंसनजोजंनजो
कोई सोसियदेषिफेरिफिरिऔहैं संजनसुजसजगननमहपैहैं मरजेठंमहीअंनुजलंना कहं
त्रिहविपसजोरनहिंमोमहं नानेसियकोउआवहिंरबी घलहिमारिहैंरामविसेषी दोहा
लग्योकाहंनिआपनिकपोलरपिनरुंसंपाति पेकसमैदोउबंधुकरवेगसराह्योज्ञाति ११७
चौपाई नानेंवहंसिल्लेनलभअंता उउवेगसोंहोउबलबंता जरनलग्यौरविनिकटजदाई
वंधुविलोकिदयाउरआंई नालिवन्चावनममपरजरेऊ हैंअतिविकलभूंमिगिरिपरेऊं
मराछिनतीनिदिवसमहंजाग्यो विकलन्चहंकितजोहंनलाग्यो लषिमुंनिआश्रमतहं मेग
यो मुनिरुचंद्रमासोकिनभयो गदगदगरभरिलोचंनवारी कहंकिमिभै असदसाविहारी
मुनिसोंकाहिविरनोनहिंगयऊ पक्षविहींनदुषितहैरहेऊ मुनिदयालपंनिकहुसहिभांतीक
रऊंसोकनारिनुमसंपाती दोहा कौंनसानउपदेसमोहिंछोनिसीनभोभार पंषिबोलेमुंनिमो १९

गिरिदरिमासबितासो अजहुंमरिकहुंषोजनपासो मेरिहिनपसवमनकियठीका नातें पनसंनब्रतहैनी
का कुसबिछाइतहंब्रतकरिबैठें सिगरेसोकसमुद्रहिपैठे गिरिनेकदंरोगिद्धयकधीरे हरषितबोल्योबच
चंनगभीरे भारीआपिअनसंनब्रतलीन्हें विधिबहुदिनकहंभोजनदीन्हें बोलेसबकपिसुनतडेराई
षासोसबनचहनसरभाई हंमसबरामकाजनाहिंकीन्हो मरनहुंगीधहिंकरविधिदीन्हो दोहा॥
होतिजटाईगीधसम काहुकीनहिंभागि जियतरामरागीरह्योमर्योरामहितलागि ११८ चौ०
जियतराजिपहिनकीकीन्हीं मरनपरमगतिसुषसोंलीन्हीं कह्योगिद्धप्रियवातसुहाई॥
कहंहिंजटायुमोरलघुभाई जरहुंनषबरिकहहुंसबभाई रह्योपरमप्रियमोहिंजटाई सुन
निकैहौंमैंबचनसुहाई तुमकहंदेहौंसिषहिंबुताई उठिअंगदताकेढिगगये सबबिरतांत
सुनावतभये सोसुनिमरनजटाईकेरा हरषितसोकितभयोघनेरा तरलोमोहिंलेचलडं
उठाई देऊंतिलांजुलमैंनिजभाई सुनिकपितासोंअज्ञाकीन्हीं गीधतिलांजुलिजलसरदी
न्हीं सोरठा नेहिंस्नानकराइ आपेकपिसुनतहीं बोल्योतहंषगराइ सुनहुंबीरसबममबच
ने दोहा गिरित्रिकूटकेसिषरपरनगरीलंकानाम मधिताकेंअभिरामअतिएकअसोकअराम

कि०कि० षष्ठई जैसहिं करि परधामहिं गई जेहिं छन आये बाहेर कंदर तहां नैन षोले सव बंदर सिय षोजन गुंनि क
१८ ठिन वुती मुष वैठि निरुन नतर लगे करन दुष अंगद कहं पौंन पाई सीता ग्रह तौ मास दरी मलं वीता नेकौं
न प्रसा सैंन न रिं कीन्हें हम कहं रइ उडुस हडुष दीन्हें वालि वैर अव मन हिं विचरिहै जात हिं कपिप
ति हं मक हं मारिहै उभै भांति विन मरन हि दीन्हें कछ्यो न जात काज विन कीन्हें पवन नाक हति नैन भ
रि आए रोवन कपि डुं आइ समुझाए दोहा तजहुं सोक जुवराज तुम वसिय दरी पहिं जाइ दुरगंम क्ष
ति पहं गो पिहै का करिहै कपिराइ ११२ चौपाई सुनत वचंन आयो हं नुमाना धीर वीर अरु परम
सुजाना अंगद सों वोल्यौ असि वांनी तुम काहे कहं तजहु सयांनी ऐसी सिष जे तुम्हं हिं सिषावहिं तुम्ह
हिं त्यागि निज निज गृह जैहैं राम वांन ते नाहिं वचैहैं करै राम सव जग तनि पाता है कंदरा कोन प्र
वाता कुल महं तुम कहं पुंनि प्रिय अति हौ तुम को हित न करत अस मति हो पुंनि यह पे कछु मम मत
जांनो राम हि पारब्रह्म करि मानौं दोहा हंम सव जन के हाथ हैं षोजहु सहित समाज सोक छांडि
धीरज धरहुं सिद्धि होइ गो काज ११३ इंमि बुझाइ जुवराज संग गये सिंधु के तीर गिरि महें ऊपर ठाढ
है लष्यो जलधि गंभीर ११४ चौपाई चिंता मगन वैठि पुंनि तहां करै विचार सीय षोजों कहां ढूंढन १८

जबदरसंनकारनवरषहजारंनकरितपधारनरूपिपरी हेरामहरी जैअंतरजामी जंतुअंतुगांमी मोप
रस्वांमीकृपांकरी जगकिजिभरी जगव्यापकवेदआदिपरेस्त हरषिमहेस नामरटै जंनसोकहरें ॥
जैअलषनिरंजन जंनदुषगंजनमुंनिपदकंजनजालपरै मनमोदभरें निजभक्तिपसारनकार
नतारनअसुरसंघारनरूपलसै मुनिमनहिंबसे भ्रमकारिविज्ञानीनजिगुनषांनीनिजवपुजानी
दुनिहिंफसे लहिंनुवंदरसें जेहिंवरनतनारदबुद्धिविसारदसंनकहुंसारदगतिमनकी अतिरह
नियकी अबरजयहभारीभयोषरारीमहंननिहारीसबछविनकी सषमांहछकी १०८ छंद पर
कासीसषराहीगामुसकांनिलसें धंनुधारीसषकारीहियमहिवेषवसैं करिबांनीसुबसांनी
दैकरजोरिरही लषिरामेअभिरामेसोंअतिनेहभरी १०९ हरिकहभरिस्वादैंजोतोहिभावैमांगु
मांगुवरभागवनी हरषितसोनारीकहिसिविचारीनाथमारिहैंयहविनती सबभषंनकीन्हेंधंनुस
रलीन्हेंपहिरेपरअनमोलतसैं जनसीयसोहाईसंदरभाईआपुहंमारेमनहिंबसै १९ दोहा अति
कृपालकरिकेकृपा दीजेंभवदुषघोर करहुंसंगतसजननकोंहियंप्रेमभरलोइ ११० ऐसेहोइप्रभुक
हसोजाइबदिकाधांम नरहंनपकरितेपाइहेंममपुरअतिअभिराम १११ चौपाई गेतहंपरपरिअति

कि० कि० भीजे कठन विहंग अनुमानी मविशेहं मयरहिं गुसांइ भवानी अतितम मसवेद महदुषपाए १६ ३ँ जोगतु वेठि
९७ गलो आए श्रवतुम कहहु आपनो नाम केहि हित करहु तप यहि अभिराम आवहु जल पी करि फल भो
जंन मे कहिहौं तव सकल प्रयोजन दोहा अमिय सरिस जल पानि करि जैसहि फल कपि षाइ नाइ
सीस बैठत भए देवी ढिग सुष पाइ १०३ सो कहै छत्रा गंधर्व की स्वयंप्रभा मम नाम मुक्ति हेत तप काल्हु मे
ध्यावहु निसि दिन राम चौपाई हेमा की हौं सषी पियारी सो करि तप पर धाम सिधारी चलन कहीं
मोसों अति बांनी नरलीला तप करि रिकै सयांनी त्रेता लेहुंहिं प्रभु अवतारा भंजन हेत भूमि मे भारा
तिनके कपि सिय ढूंढन जेहैं तेन वहु तुम्हरे आश्रम ऐहैं तिनहिं प्रजि सतकार हि कीन्हें पुनि तैं जाइ
दरस प्रभु लीन्हे पद परि अस्तुति करि सुष पाई बसे राम के धाम हिं जाई अस कहि एजंन वहु वि
धि कारिकरि सो बोली उर आनंद भरि भरि मै चाहौं अब देषन रामै तन घन स्याम अनंद हि धामैं
दोहा जाहु तुरत केपार अब मूंदि नैन कपि धीर जैसहि कीन्हों सब निसो गई जहां रघुवीर १०५
राम लषंन सुग्रीव कहं निरषि परम सुष भरि परिदक्षिन करि करजि में नमस्कार सों भूरि बोली
धंनि गद गद वयंन तप करि दरसंन हेत मै आई तुरंत पास लौं हे प्रभु के धानि केत १०७ छंद मरह
ठौ ९७

मन लाये दक्षिण अंगद संग सब बंदर ढूंढन लगे गहन गिरि कंदर भारी येक निसाचर देख्यो तेहि सब क
पि राव्रन करि लेख्यो कीन क्रूर करि मुष्ट प्रहारा ताहि मारि पुनि कियो बिचारा एवं नन हि करि औरै
कानन ढूंढहिं सो पवि कल सब प्रानन अति प्यासे तरु खांहीं जाहीं सूषे कंद अधर मुरझाहीं हारि
ते ता नि दरी एक देखी ढूंढत भिंग बग जल लहि बिसेषी हनुमान हिं आगें करि लीन्हो सब कपि दरी
प्रवेस तहि कीन्हो छंद गहि एक एकन बांह सब कपि गुहा महं प्रविसत भए अति अंधकार अ
पार धीर हरि नाम कहि पार हि गए तहं लखी अनुपम बाग सुर तरु सम हि तरु फूले फले सर एक सर स
पं न व सनन भोजंन धरे तहं बहु बिधि भले सोरठा कनक सिंघासन नारि प्रभावती बैठी जहां ध्या
न मन नहिं धरि परि हैं पट बल्कल नन के १११ दोहा सुनि षरभर देखी जगी कपि सिर नाए ता
हिं बोली सो अति प्रीति करि हरषि कपिन दिसि चाहि का के हौ तुम दूत सब कौन तिहारो काज के
हि कारन यहि आश्रम हि आए सहित समाज ११२ सो छांनि कह हनुमान सुजाना दशरथ तनै रा
म भगवाना पितु सासन लहि बन कहं आये लछन मारि सुनि पातन भाए तिन की प्रिया चोरि को
उ लीन्हीं तब सुग्रीव मित्रता कीन्हीं ढूंढन सिय कह हम हिं पठाये खोजत त्रिभुवन गिरि हि यहि आए

किं॰ किं॰ गाये आर्वेनि छोरमनिमेंगिरिवेसा फेरिपुन्निकरमनकरदेसा पित्रलोकहैंतिनकेंआगें तहंनहिंजा
१६ एकुंसवभयत्यागें फेरिसुषेनहिंसैनपकरेंउ त्ताषदेककपिसंगकरिकहेंऊ दूटेउवनसरिउदधि
वनाई सुरकेहुंस्याचललोजाई सजवलिकहउंजरलिपठाये त्ताषवंदरंनसंगेलगाये उत्तरउद
धिहुकेजोउत्तर तासुनामहेसोंमसैलवर सोरठ जरुनेसेलदेषाइ दूढिफिरयोंनलजेसवे पुंनिकहं
रुाषउराय सनहिसेनसवमोरमन २७ दोरुा विनदूटेजोसीषकेंअेहेमासविजाइ सोममकर
नेवहहैंकहोनिकटरघुराइ २८ चौपाई पुंनिकपिपतिहंनुमनहिंवोलायो कहयोवीरतुमअति
वलपायो मनसमजवसवसासवप्रवीना उधिवलअतुलतुम्हैंविधिदीन्हो हमरेहितवासी
तुमभाई दूटेहुंसियकहंमनहिंलगाई देवदनुजनहिललिवेलायक गनिसरवत्रनवहहुंस
हायक असकहिरामसमीपहुआयो रामहुंपुंनिहनुमनहिंवोलायो निजमुदरीदीन्हीसाहि
जोंनी फेरिपठायोकहिसभवांनी हरषितगवंनेउपवंनकुमारा रामकाजकरधरिसिरभाए वै
ठेरामलषंसजुतनीती करहिंपुरानकथापुनीती दोहा सहरनसेलननदनदिनसिंधुनदीपनि
वेरि तीनदिसंनकेकीससवफिरिआएसिपहोरि चौपाई देसदेसकेवीन्हलेआए देसुग्रीवंहिंसी १६

सो० ९२ चौपाई पुनि कपि पति अंगद हि पठाये जिन स्वपास जुत सब निरिकाये सुग्रीवहुं कहहि
पुनासंन आये सब कपि लहिं मम सासंन बिनचारी अरु अति बलवांना नहि जिन हानव दे
न समाना जाहि रर न म हहै बुधि आगर जीं जे अमना कहि सब सागर नाना सरि नि गिरि नि
केवासी छिति पर दसिन मांहं बिलासी ते असंषि कपि गन ये आये अहंहि आप कारज मन
लाये दीजे सासंन जोर भुनंदन करें सबै सोई करि पद बंदन संनि श्री राम कह्यो मुसकाई
षोजि सीय सुधि आवहिं आई ९२ कहि है सबेराषी हसान न परम प्रिय मम जानकी कहं अहं
हिं ताको तासजा को त्रासनहिं निज मानकी लहि सब वरि लै संग फौज कारज उ चित जोइ सोइ कीजि
ये यहि काज मेलौ तुम्है स्वामी कपिन सां सन दीजिये ९३ सोरठा बिहंसि कह्यो भगवांन सब बि
धिकारज मह निरत हहर स्रसील सुजांन लछिमन संमरु मरे तुम्है ९४ दोहा बिन मनु थ्याये
बोलि कै हरषि कह्यो कपिराउ स्रसि सबिता संमल स कपि संग लै मरु ब जाउ ९५ उदधि नाकिगि
रिदीप हुं न जहं लगि रवि परकास जल थल ढूंढेउ सीय कहं अरु रावंन करवास ९६ नलसे कपी समस
बलवांना अंगद संग दियन पानि सुजांना तिन कहं दक्षिण दिस हि पठाये नहं के गिरि सरि दीप ब

कि० किं हे अष्टजाम हैस हस कोरि भट भीम संग जे चलत न करहिं गिरि वर न भंग को जास सरिस पर हं हनूमान
१५ परस सम न अहे वल वेग जांन अनि वलीन लहिं देषियत होरि संग पेकलाष कपि सत करोरि परलस
नद रीमुष कपिननाथ वलवंत कीस दस कोरि साथ परुलसत नील सैनाधिपति संग अमित कीस
सुन सील सत्ति पुनि अमित पदुम आये कपिंद्र दलरे हव लऊ सम अहे इंद ९८ दोहा अगिनि रं
म अरु सरभ कुमुद आदि विरुद नाम कामरूप अति वेग हैं सवै महा वल धाम ९९ समद्दीपन ष
षंड के आइ आइ कपिनाथ सुग्रीवहिं रघुनाथ को सवे नवावें माथ चौपाई महा भीर आतुंन नहिं
पावहिं नेव दूरि रहि जे सीस नवावहि कोउ आकास हि ते सिर नावहिं नमस्कार धुनि कोउ सुना
वहिं सिगरे आत्मनिवेदन करहीं निरषि राम छवि छकि सुष भरहीं कपिन जुथ्थप तं न लै कपि
नायक कह्यो जोरि कर प्रभु सव लायक इन्हें सहित मै अरपों निज तंन सुनि रघुनाथ भये प्रस
न्न मैं न हंनुमत आदिकं नसों सुग्रीव कहें उंफेरि अति हरषित होंउ आए सव कपि के कोउ
नाहीं आवउं देषि पहीं छिनमाहीं जुद्द जुद्द कारि जुथ्थ कपीसा दीन्ह हाजिरी जहं हरि ईसा ॥
दोहा पेक किंनन पेकहिं घन हिं हरषित माषाई ल कुशल मस्त कीन्ही सवनि वेचेन पे कौकी १५

नमहाबलपासो कोरिहजारकपिनसंगआसो नारनमाकोपितुपहआसो कंजकिंजलकरंगननराजैं
दधमुखनारकसमहिंविराजै संगसहसकपिअतिबलधामा हनुमानपिताकेसरीनामा संगकपिको
रिसहससमुखकारे पलगवासगिरिवरतनधारे संगरिसहैकोरिहजारा धुम्ररिसपतिवलहिम
गारा हसकरोरिकपिनरसंगजाके आसोपनसमरावलयाके छंद गिरिकनकसमकपिपुंज
कोरिकसंगगवैविराजई संगतीसकोरिहजारअतिवलदरीमुखपहछाजई संगकोरिकोरि
हजारदुविधमयंदअतिवलवानरे कपितीसकोरिकसंगगजहयरिसपतिजंमवानये ८७
दोहा इनकेसंगहराकोरिहैंरिसमहाबलवांन रिसराजअतिवलीवृद्धसरहजांन छंद
पद्धरी कोरिकहजारसनसंगकीस आसोसगंधमादनकपीस पहदुमननामकोविदिन
वीर सनकोरिलियेसंगसमरधीर सोसंखकोसपटुमनहजार संगलषियवीरवालीकुमार
पितुसहितवलीअरुवयनवीन करिकृपाआपजुवराजकीन दुतिनयतसंगकपिकोटिपं
च पलनारवीरडरनाहिरंच वारहकरोरिकपिवोजमान मधिलोनिसंकपहइहजांन संमन
तननरनिपलवीररंम संगऐतुलसकपिजैनवंम हैकोरिसंगदुरमुषहिंनाम पलचलनजुरु

किं० किं० मिलीसियप्रियतासहैं अनुचरजनन्हरखवइंइकोनिसिचंइकोपरकासहैं जिमिहरनरविमुकरनतिमिनु
१४ मसोउनारि अनुचरजअहे जोपाइतुमसोसुफिरमेराजानहैंपहइछमहै सोरठा तुमसोंमीतहिपाइजि
तिहोमेसवरिपुनको करिहेजोगिसहाइ तुम्हेपेकमरेअहो दोहा अपनेनासनहेतनपहरावनति
पहीलीन लोटिहेसठरंनभूमिमहँममतरातिरविनकीन २४ मारुतउमंडलमदोनेहिंछत्रकुं
कितधूरि अंधकारदिसिविदिसिभोआयेमरकटभूरि २५ चौपाई लागीउगनगिरिनिजुतधर
नी चटेगजनिजिमिडोलतिजरनी उनिआतिवलतेनमनऊपहारा विविधिरंगअरुविविध
अकाए तीक्षणनखअरुदंतकराला पीनीकरिउरबाहुविसाला कपिअसंखसोछितिसव
छाई औरोसेननिमिषमहंआई कोटिनपदुमनकनरनछिरे जेकवहुँरंनमहंनहिंफिरे तेअ
नेतजुथ्यपउनिआए दिसिअरुविदिसिगंगनमहिछाये उनिआयेकपिभरेउमंगा तरुणानं
रनिसमजिनकेरंगा कमलकेसरहिंसमकोउराजहिं सेनससीसमकोउकपिछाजहिं दोहा॥
ऐसेवानरअतिवलीसंगदसकोरिहजार धीरवीरजुथ्यपलसेसनवलिवलहिअगार चौपा०
कनकाचलसोजासुसरीरा कोटिसहस्रसंगकपिभीरा तारापितासखेनसोलाषा वेदकनिपें १४

गांइ हरषि निरषि प्रभु मिलि भये निज निज जुथ्थन जाइ चौपाई सुग्रीवहुं प्रभु पायंन परे राम हुं मीन प्रीति
मन भरे पूछी कुशल हरषि हिय लाई कपि सो उचित राजंन बेगाई कहे सुग्रीव जोरि कर बैना तब विये आ
वति आप निसैना नीस करोरि साम कपि घोरा घंन घंन सम आवत सहित जोरा तम महि रन्च रूप जेपे
है दस करोरि स्याच लंके है विविधि बरन कपि कोरि हजारा इनको है कैलास बिहारा कोरि सहस्त्र
सहस पे बंदर आवत बसहि हेमाचल कंदर बरन अगार जे कोरि हजारा आवत कपि जिन विं
ध अगारा छंद पे छीर निधि के तीर वासी विपुल पर्इन भावही गिरि सरिनि के कपि और नम
रूपं व काल अंभु न तावही ये उड़ न चासो वार ने कपि तरनि मूंदन आवही जे न जां निर समें गं
गेन न रु फल विपन अति सघपावंही ७६ बहुं जुथ्थ नाना वरन के कपि भीर पावर घंन भरी॥
जे गए ते जुथपंन बोलावंन जे ऊ सब आए हरी सब देस के सब चीन्ह लीन्हे औषधी फल मूल हे॥
दै कह्यो आवन सबै कपि जे सान स मुद निकुल हैं ७० सो लेकहो सुग्रीव आए दूत सब निचला इके
प्रभु काल यो रहि आपके ढिग वीर पहुंचन आइके सुरलवं न चौ सक्ति को कि कपि पति काम रूप हि
तिवली सम पवंन वे गहि सिपहि दुदि है व चि हिन हि कहुं कीय ली ७१ मिलि राम पुंनि सुग्रीव को कहे

आतुरधावनलससनभले जेउपरवेनचलायेवहुरंग धाए घंनछुविछायेजनरलचले अथवागिरिराजसुता
केकाजकरनसमाजनवहिंभये जैसेनहंगिरिवरनेउजेंतहहिंवरनिरषंनहिनहरगेगंनछये सोरठा॥
धुंनिसुनि दसदिसिहेरि हरषिकहयोपुनिपवनसुत लषियेनैननिफेरि येआवहिंकपिजुथ्थवहुं
चौपाई येकपिउडतअहहिंवहुजोजंन जेहैसिगरेसीनहिंषोजन चोनीसनतपवनसुनकेरी लषि
मनउरभैलाजघनेरी सुग्रीवउपुनिअरषपापरि आसंनदेवहुविधिसंजनकिय मिलिकहेउपु
निमेदासतुम्हारा रसाकियरघुनाथउदारा रामप्रभाउकाजसवसारे हमकहंहेसहाइजसभरिहैं॥
लषिमनकहयोनीतिकीरीती मैजोकहयोछमहुकरिप्रीती टिकेअकेलेरघुवरवनमें विरहविक
लहोवेछनछनमें जैहोमेसोविनमममजोऊ चलिहोमेंकहयोसुग्रीऊ दोहा एकहिंरथदोजवढे
वाजेवाजनभूरि रीछवानरनसंगलेप्रभुपहंगेसषपूरि अंगदहनुमननीलनलऔरोकपिपर
धांन छत्रचमरआदिकलियेजिनजंनसैलसमान सोरठा वैठेजहंरघुनाथ सुहाद्वारसुंदरसिला
भरेविरहकेगाथ विहसतनैनवारिजवहेंन ७८ अंगअंगसुषछविउमाह लषिहरेउरससिंधुस
व राममिलनकीचाह कपिपतिरथपहरिहिंतजो दोहा वंदरहनुमनआदिजेकछुचलिसीसन॥ ९२

हनसोहाई दोहा साधुकस्यानहिंरुपतुवेंभक्तवसलभगवांन प्रियदेवरममभागतेंआयहुंकेपानिधांन
चौपाई भक्तभक्त तुम्हरोकपिनायक तिनपरकोपकरवनहिंलायक बरुनकालइंनवडुंड्षसल्पो॥
पुंनिप्रभुदिसोबरुनत्रसबलल्पो नातेंकामनिरतहैगये सेवाकरंनहिंपहुंचतभये इनहिंतेंपठयें
अञ्जनवंदरन त्यावनकपिदिसिविदिसिकंदरंन कपिनसाथआपहुंकपिनाथ हेरिहेंसियमहिं
दससाथ आपुसंगचलिहैंवैआज परषेहैंकपुकपिनसमाज इनकरंआपनअनुचरलेषो॥
चलहुंजियेंनज्जुनमीनरिदेषो भेंटकरनआयेनहिडरसों श्रीरजउरधारेंप्रभुवरसों दोहा चलि
प्रमिलियनिजमीनकहंअभैदीजियेतान फिरिसंगहिलैजाइयेजहांरामभगवांन चौपाई सुनि
ताराकेवचनसुहाये लषनलाजिनततवसीसनवाये पुनिलछिमनअंतहपुरगये रुमासंगतेहिं
देषतभये लषिसुग्रीवंतनज्योपरजंका धनरोसोंसोंमदमेंअनिसंका ताकीदसाविलोकतलछिमंन॥
क्रोधितभएअतुनदोउलोचंन जोबालिहिंजंमपरहिंपठायो अरेमूढसोसरविसरायो सुनतपवं
नसुतदोउकरजोरी करुपोसुनियविनतीप्रभुमोरी येतुमकारजनाहिंभुलाये कपिनबोलावेंनका
पिनपठाये रामहियेंअनिहोंएएअहें कातेंआपुरोषक्रुरिकहैं छंद वानरभटआवतनभपथधावत

कि० कि० ७२

बहु नेहि डेर वाइ बधकरिबो अनुचित मरो चौपाई सुनि कोसल लषन चले धनु लीन्हे ग्रबरो बिन उरहायहिं की
न्हें अति आतुर किसकिंधहि गए कपि लछिमन कहँ देषत भए जनु ज्वार न किसकिंधहि रोषू उपेक्ष^
पिगुनि कपि पति दोषू बिरप उषारि गृहँ न नेकदे कटकराइ प्रासाद न चढे लषतैं आतुर अंगद आयो रा
म अनुज पद सीस नवायो पुनि पुनि अस्तुति करि कर जोरी कह्यौ छमिय मनुज कहि मोरी लषन क
ह्यो कपि पति हि जनावो आयो मैं रघुनाथ पठावो सुनि अंगद कहँ बालि सिर नाये लछिमन नह्वा^
कोप करि आए सोरठा सुनि सुग्रीव डेराइ हँनुमंत सों बोले बचन तुम अंगद संग जाइ लछिमन
ल्या वहु करि सनमान सोरठा कह्यौ फेरि तारा तुम हूँ जाइ छमा कराइ बांइ तांय जोरि कैं मो निकट ल्याव
उ तुरत लेवाइ चौपाई अंगद संग गए हँनुमाना कोपि तज हँ ठाढे भगवाना बहु बिधि अस्तुति^
किय पद परि परि पुनि कर जोरि कह्यो मुर भरि भरि बलउँ नाथ गृह ऐं न तुम्हारो लषहुँ मीत जु नाँ^
निज परिवारो पुनि जो स्वामी आयसु होई भूपति सहित करव सब सोई करि प्रसन्न हँनुमन ले आए
पुर जें नल षि अति आनंद पाये मणि हार म हँ ठाढी तारा रूपवती सब कियें सिंगारा महँ अरु नीलो च^
नकें कोरनि सब विधि सों कि भवँन चित चोरनि लषन निरषि सों सीस नवाई अमित सुष अस क

७२

आलिगंन लसहिं जंतु लहि जा चक्र दांन इस लिसि जस गाव़त फिरहिं चौपाई दादुर लसहिं मोनङ्हे
रहें जंतु सत वैठे वो धहिं लहे कऊं कऊं से न वला हक कैसें पापी गंगन हाये जैसें मलत जिजल
निज रूप हिं पायें सरजू से वी जिय जंतु भाये अमल चंद्र कर कलित अकासा जिमि तु वभाव क्र
हिय परकासा नर निनेज पंथ निज लहोषा जिमि स दंतु ननन साव़न रोषा कूजन हंस समूह सो
हावें जुरि जुरि संत भजंन जंतु गावें मनके हरी व्रषभ भुवंगम औठे फिरहिं गन हिं नाहिं कोउ
सम रत अनीन अरुन नवल वांना हेरा फूलि कांसि फरि अवगई जिमि वल सहि न समाज॥
वटि थोरे का लहिं न सतन मगरे नेज सुराज चौपाई धानफली नेने अति भावे सज्जन वढे स
भाव जनावें निरमल पीनि धी रस रिदरहीं जंतु पे अव धूनि निनन पकरहीं सुनि हरिक हों हु
नऊं हे भाई कपिपति मम सुधि निपट भुलाई निरखन नीचसर हइं मिआई नघपि प्रगट नकनथें न
नाई अपनो किये कर्म फल पैहे मोहि को पेवा ली पहजैहें लक्षो सरो घ लषन जवनाये फक्के आथ
रति पोध तु लांये कहयौ बडे लैसां सं न पाऊ तुरनहिं षलहिं मारि मै आऊ रोषि तल षिमाई धंनु
धारी मयो मित्र कारनि धंन विचारी सोरठा कहयौ राम मम सकाइ सषा हकं ठ हे मार प्रिय॥ सा

कि॰ किं॰ कपिनसमुहाइ चौपाई पाषभरेमहंजेनहिंऐहैं तेममकरवधजनमपरजैहैं असकहिअंगदहृ
११ रुजाहिंगये आसवंपानकरतनहंभए इहांपवनसुतनैसहिंकीन्हें तुरतकपिनकहंआयसुदि
न्हो वायुवेगवलवुध्यअगारा दक्षिणदिशेकपिसमुहहजारा सीतापरमविरहउरछये रामहुं
केहजलवनसोभए सियधौमरीजियतधौअहई सो ढिगआइखवरिकोउकहई ममतिय
हरनहारउपकारी मथिसमुद्रइवंसरगिरिभारी सीयहधासमलेउनिकारी सुनहुंसुर
तिज्ञाकहौंपुकारी दोहा जनकसुतनहिंलैसतुजोंसुनेंगयोपराइ तेहिंसपुत्रवलवाहनं
निहतिहौंसहितसहाइ चौपाई किमिजीवौवंधाननिजुमविन विरहअनलजारततनछि
नछिन सिषहिंपरसिससिमोअंगपरसैं जीवंनरासनसुषकछुवरसै दुखितनाथलषिल
छिमनकहेसी चलिहतअवदुखपारहिंलहौ आईसरदविगतभैवरषा भयेछमाजिमिज्ञा
नअमरषा चातकमदनमोहतजिदीन्हें मानहुंवसुविचारहिकीन्हें भोजंनकरहिंअगारव
कोरा सीतलदेवंलषिससिकीवोरा जिमितुवंरूपहिजोअंनुरागें ताकोंसीतगरमनहिला
गै अमलकमलफूलेयेअैसें हानदेतहानीदिलजैसे ॥सोरठा करिमकरंदहिंपानउडिगुंजत ११

भयोआपुसोरघुपतिराखो पुनितवँसबकारजनिसँवारो बडीभागिअपनीतुमजानो ताकोकाजकारब
मनआनो जैसबकारजसमरथअहही पैजसदिसोतुमहुकहँबहही सासँनकारउँकपिनकपि
नायक सिषदुदवहैसबविधिलायक तुम्हैबालिवधिनपकरिदीन्हो अनुचितउचितनविचार
नकीन्हो तिनकोकाजबिसारवकपिपति मेरेमततजोअहैअजितअति दोहा सुरपरनरपुर
नागपुरहैतेनपुरनहिंकोइ राखिसकैजोरामकोपरमपियारीजोइ फिरिमैंधरिअतितर
लगनिकरिसबलोकनगौन हरषितकैसिपकूदिहौंजहँभरिपहुचनपौन चौपाईहेअ
संष्यकपिजुथ्थतिहारे बनपरवतनदहीपपसारे उरपजतुवँबानीगतुवाई षोजिहहिं
सियकहँसबविनुलाई रामकाजहितसंगरसाजिहों नदनुमवीरभुवनमहँराजिहों सुरअ
सुरउँनहिंसरिसनिहारे निसिचरकाकरिसकानविचारे हितपरलोकलोकमहँसोई ॥
रामकाजजाकेमनहोई सुनियहमंत्रविषैविषतजो सांमीरामकाजमहँसजो सुनतवचन
सुग्रीवँहेरानै परमपथ्यकपिमंत्रहिमानै कौनदेइअसओरसिषावँन जसहनुमकहँपापवँ
नसवनपावँन दोहा वेगिपठावहुकपिनपतिहूतनअयतुवोलाइ समसीयकेल्यावहीमातु

कि० कि० बासवदूतनसरएना जेहिंबलसकलसराहतभूजा दोहा तेजमहंमरेबांनकेंलसभयेहौं आजु कारन
दु प्रहारनपाइहौंजरपितरलकपिराज ३० चौपाई सुनतहिंबालिशरीरबढायो नभमंडललंगूर
मेंबायो रामबालिकरजुद्धविचारी रुमालषंनहितचढीअटारी परसोनमरघुबीरप्रसाद अब
पैहौंपतिपरसंतनस्वाद हरितरथाकरतमपहबाली निपटहिंकलिकलुषंनकोंष्याली छूटेकेश
बिगतभूषंनसों हरुंबिधिबिनयकरतिदूषनसों लरुनिचरुनिदुषसागरपारै प्रभुढिगपति
निरषतिबसमारै इनैरामकरुलाछिमंनदेषो सबनैपहककपिअधिकैलेषो जोकोउकहिंगा
नगहिलेई कौनसुभटयाकौंजुधदेई दोहा कूंदतजबलीनलेगजितनबैहिंकाहुलषाइ अंग न
पवंनकेपरसनेंसबितौंरथउडिजाइ ३१ चौपाई भुजदंडनबलगर्वहिंधारी कौलेलंगूरहिंगिरि
भारी जोसलसैलअरुबिटपपहारा असप्रभुकरुनहिंबालिबिचारा मुठीबांधिइदकौपिकपी
चहंहिं सा जौलौंहंनजगदीसा तौलौरघुवरसरहिंचलायो छेदिताकुउरधरनिकंपायो लाग्यौंबांन
गिर्‍योमहिकैसें बज्रनिहंनिकनकीबलजैसें मुरछितबिकलपर्‍योरंनधीरा जागिलष्योसुंदर
रघुवीरा धनकरबांमअलंवनकीनें दहिनकरहिंबांनवरलीन्हें जटामकुटसुंदरसिरराजें॥

देउ बनाई लषन कहूँ सौं मो हिं लछिमन जानो रामहिं निजमन तें अनुमानो हरिसों रुषकिकहौं
उं निवालो परसराम छत्रिन कुल घाती तौ नहिं वरन चलै जगराषा ते आये तुम परकारिमाषा ति
न कों तिरसकार की दीन्हों छत्रीवंस उजागर कीन्हो ते तुम कहं मैं जब तें देष्यो आपनि भाग्य थ
न्नि करि लेष्यो दोहा हरि कहं तुम लों इंद्र तन रावन कहं गहि कोप समसिंधु संधलि कियो र
उर महं करि कछु माष सो कहं वानी सुषद तुव तन तें नभ्र तंन अघान कारज बस कछु कह
न हौं सुन उं नयं न जल जात २७ जेहि विन दुस्तर हरि लियो परसराम कों मान उन कों ठिन
ते हिं लषन नहिं जिय मम भुजबल जान २८ सोरठा तुवं तन भारी राम हरन लार त्रैलोक दुष॥
सो देष्यो यहिं ठांम तौ हम नहिं अब हिलौं उमे चौपाई सहस बाहुं जी सौं रावन काहं परसराम
जै पायो तिन पहं तिन कौं दाप आपहि लीनों परम सहज सम चजगम हं कीनो जो जुधि कारिहं
मसंन जैयाउ तौ सब तन ते बुल वान कहां उ मरउमसका इराम अस बोलें मैं नौं षउो धनुष कारों
लें तुम हू आयुध धारन करो उं निकेसावधान कपिल रो सो कहं अहहुं धर्म धुरधारी कासन क
हं हुं अस तव वंनवरारी कपि कें आयुध दंन न बहि हैं कि एजुद्ध वध अघ नहि का हिहैं हरि कहं

कि॰ कि॰ पठयौं न किसकिंधहिं कीन्हों । बैठो बालि द्वार लीं देष्यौ जेहिं जेन कनक सैल सम लेष्यौ सोऊ रोउ कुअँर विलोका
५ चकित तरल पीच षभरि छवि योका गुंजौ कुअंर नयन जुगल किसोरा सुंदरतं न लागहिं बरजोरा मोरे जान इन्द्र
हिं महं कोई फेंकु न हार देन्ह सिर होई दोहा फेरि गुनन मोहरी निकर अपने अनुजंहिं जोहिं परम मी
न दशकंधम रजो लिषि पठसों मोहिं चौपाई दशरथ होउ निज सुतन निकासा तिन दंड कवन कीन नि
वासा तुम्हरे जे सहाय हित निसिचर राषें मैं जंन थान सहित बर जिन कहं हंनिरिषि मूकहिं आए
सुग्रीवंहि निज सषा बनाए अहंहि दोउ मुनि बेष हिंकीन्हें बल बान न मारन मन दीन्हें होमी
तुम सषा पियारें कीयों सोई जाहिं जेहि मारें सबल छनइ न लीं मरुं भावन जे पेई मो मन न अ
स आवन राम रुं कह्यो तात तुम जाई मो कहं बालिहिं देहु जनाई लषंन गए पूछेहुं कपिरा
ऊ को तुम अहहुं कहहुं सति भाऊ दोहा राम छत्री लछिमन कहे पोसो पुनि कह्यं मुसकाइ छत्री
जाति शरीर रही नेंतु वंजानी जाइ राघवं हम लछिमन कह्यो सो कारु कारन विचार केर छके तुम पत्र
कें राघव नाम तुम्हार २५ चौपाई तिन कहं हं मर घुवंसी अहें राम नाम लछिमन सवक हैं सो
मन गुंन्यो राम मयें सोई जंतु दिष्य परस राम मम दषोई तुम संम वेस अहहुं दोउ भाई कौन राम सें ५

जाहैं औरै दिढ है स्वर्ग रिंपाहैं तुम्हहिं विलोकत नसोक ढिगयो उर विज्ञान प्रेम परभयो आध ऊंछ नमंन
तुमम हंरहे तो तुरत लहि विज्ञान महिं लहहैं सहवांनीसनि वेद की मैं प्रभु लिप अजमाइ और ननी को लग
तेभव तुवं पद भक्ति सो हांइ अवसांसन मोहि राजि कों दीजे नाहि षएरि मोकों दीजै प्रेम पर अपनी
रीति बिचारि सोरठा जबतें देखें उपाइ तब तें भो विज्ञान उर तुम मै जग तत्व षाइ शत्रु मित्र को उभ
मो रहतहिं चौपाई जब लो बहु त्रिगुन तनै प्रांनी जब लो शत्रु मित्र अनुमांनी कारि नाना त्व तुहि दुख
पावै तब लौं जब कतें हिं काल स जावे मूढ अविद्या परि डषल है माया मल दारा दिक चहे क्रिसा करउं
माया तुवं दासी तातें मो क हं लेउं निकासी तव पद चिंत तजि अनुरागें नाम कीरतंन वानी लागें
तवं भगतन न सेवा करकोरे मम उर आप मिलन सुष भरे तुहं दरसंन सब लोचन लहैं सुन न ग्रंथ
तन ग्रंच तिन निरहैं पद पर दक्षिणा करहिं सदांही रहंहि सीस तन ग्रंपद न माहीं दोहा माया संत वि
मोहनी जेहि छंन दिय केत्याइ रवि सुत जन सो राजिव नैन बोले मृदु सुसकाइ चौपाई जो तुम कहे सो
मित्र तो सही गुनउं मोहि सब जग असक हीं मित्र क्रिया नेहि राजिन रीनी मंत्र मंजिज्ञा रामउं की
नी ताते चलउं बालि कहं मारी करउं तिलक तुवं मैं सुषकारी सुग्रिव कंठ सों सतनसि रलीन्हों प्रभु

किं किं भाग्य़ोरवि हनुमतेपगाई हमरेसुजनकेकि हेहुसहांई नलऔनीलरहेंममसीता नेउत्पागेंतेहिंगुनिदुर
५ नीता कहहुनरहुननञ्जसुननहूंकोगए ञ्जुप्रिमहांनविलोकनभए तिलंषिएमकछुकमुसकांने पगं
ञ्रंगुहानेहिंगहुप्रोंअस्पाने फेकुसौंदशजोजनसोगपो ढुंडुभिस्वभगाने लहिल्हषष्यो मंत्रिनञ्जुनत्स्व
ग्रीवंसराहें लषिग्रभाउउरभरेउष्याहें पुनिकहंप्रवलसातनहजारा वालिउंलाइकरनपनिता
ए जोइनककहंछहेतेयकुरुसरे वालीवधविस्वांसउरपरे सोरठा हरिहसिमात्योतीर गालनगं
नष्हितिवेधिके प्रविसेउफेरितुनीर लषिहग्रीवविरंपमितभए पहोपाइकपिहोरि उरभरि
ञ्जुपजपेमपरमहध वोल्सौंउंनिकरिजोरि प्रलकुअंगजलनेनञ्जुग जगञ्चापतुमराम ॥
परभाजनमापरेसपर ञ्ञानंदतंनघंनस्याम तुमहींव्यापकसवजगत दोहा मेरीभारीभाग्यतेंमि
लेआपइनआइ जिन्हेंलषेनहिजमुनिनिकरसहहिंलेसससमुहाइ १७ चोपाई तुम्हहिंलषेंन
छूटनभवरोगा स्वरुपजतावाहत्वउंनिभोगा तियानतनयराजिउंपरिवारो तुममासाकतनाथविचा
रो तातेंअवइस्छाकछुनाही मेरउंपरप्रेमहिंउरमाहीं ञ्ञानंदअवधिलहीमेभागंन ञ्जवनहिं किं
चहोविषयअभिलाषंन सिंहुअनारिअविद्यावंधन मेरोछूटिगयोरघुनंदन जग्यरांनवंधननहिं ४

पम हान मंत्रिन जुत निर्भै हि ये हनुमान रहहुं लुकान चौपाई परवन संभ दुंदुभि सिर भारी सो फेंकौं निज बल लखि
रारी असबल जो निज नैन न देषो तौ बल ताड़ौं न तुम्ह हिं मे लेषौं हरि हसि कहं न हहं चल हुं कपीसा भारी जल हो
दइन कर सीसा हं न निहरषि न न हई सकचले निरखन राम हि छकि छकि भले मारग चलन करूषे भगवाना
सभ गें न जामवंन हनुमाना वाली के पेस चिवं सुरा पे कहहुं मीन तुं संग कि मि आए कहं सकंठ पुनि
पुनि कारि वंदन कारन कहं हुं सन हुं रघुनंदन दसकंधर सो वालि मिताई कनोक्षपन निनी निसि घाई
सोरठा पहुतौ उचिन न होंन सुनहुं वालि मम सीषपह रावंन ओरहि गोन न वपितु रिपु पापी परम
१२ चौपाई पुनि पुलस्ति वंसिन के मीनन देषेहु महा रिद्ध निकेतन प्रहहि कुवेर धर्म धर धारी॥
मीत कियो हरनि नहि विचारी सुन हरि दन सुमिरन जिनके षाल वैल वांच्यो घरनि नके रावन
तौ पापी पितु द्रोही सुर मुनि कुलघालक अनि कोही पुनि तुवं बल सं म बल नहिं ताको प्रीत कारव
नल नहिं हैं ताको कि एमी न पहिं अबहिं विनासा मानहुं सीख मानि विस्वासा सो सुनि वालि विहंसि
अस कहेऊ पहिले उधम मान सुरहेऊ जामवंत मैसुने हुं उदाना मंत्र कहे हुं जिमि कहहिं सुजाना
दोहा निज मंत्रिन के मध्य तें इन कहं दियो निकारि न वनै मो संग होहिं रहें हितपरिनाम विचारि ॥ १५ चौ॰

कहुं मरिहौं फेरि आइ तब वंदन निहरिहौं दोहा नत न करूं पांछा देर हौं तुम ताकें मर्हवार असकहि भीतर कहुंग
सो पहुंचो तास अगार चौपाई बरष एक ता सौं रन कीन्हौं कहै रुधिर मैं अस मन दीन्हौं परम्यो पाप नहै बालि
हि कोऐं पुनि मम तरां निदुषा कि सोष बनेरो बिलपत गिरि बरश्रिंग उपारी मुदे ऊंदरी द्वार सो भारी आइ क
हयो घर सब दुष कीन्हौं पुनि जुरि मो हिं भूप करि दीन्हौं कछु दिन मह बाली बल बांनो आसौ मो हिं लषि
अति रिसि रांनो भागि बागि सब लोकन आयो कहुं न बाली जे कलपा सौ मुनि स्त्रापें डरइ हां न आवे
हरि मम ति य निज पुर मध्य छावें असकहि दुषित रोइ सोरि दीन्हौं कहु नाकर उं संक स्य कीन्हौं सोरठा
सन्मुष निज्ञा मोरि मरिहौं नर रिपे कसर मीन सोक दैछोरि धोवें हि मुष हरषित लिये चौपाई कहुं
सुग्रीव नाथ मम उग्राना केहि विधि मरिहौं रिपु विष्याता देवं नदनुजं नरउं न दुरसीता तासौं किमि जोर
हुं प्रिय मीता नाथ जात विक्रम सुनि लीजैं पुंनि निज बल हिं परीसा दीजैं दुंदुभि नाम दरन यक भारी
अति बल वांन महिषतें न धारी अर्धराति किस कि धर्हिं आयो जुद्ध हेत बालि हिं गोहरायो धायो सुन
त बालि बल बांना गरिर षा न जुग कियवि न मांना फेके उसी स नौ गिरि सिहां ई परयो मतंग कुटि हिं नि
पराई ते हिं लषि दीनी श्राप मुनीसा बालि जो अहै हैं फटिहैं सीसा दोहा नत वत्ते आवत बालि न ह्रि सुनि कैं श्रा

नकीन्है एवं नकहे सो हरि निपके कोई नभपथ चलत नारि सो रोई राम राम हा राम पुकारत बिलपत करुना रस हिं
पसारत दोहा परवस परमोहिं पेषि सो दुषित अंचलहिं फारि निज आभरन हिं बांधि कैसं चिन्हन मधि डारिय
डारि चौपाई ते भूषन हम दरी धराये आय विलोकन हेत मगाए तिन्हें लीन हरि हृदै लगाई गिरे हाय
सिय कहि मुरछाई पुनि लषन हिं चीन्हन कहे दीन्हे लषन कहे पोने वर भरि चीन्हे पुनि पुनि भूषन ले
कर जोवैं करुना की करुना करि रोवैं कहे सो हंस जिय चहत उडाई विरह अगिन पर जरे न जाई ॥
कहें सुग्रीव धरिय मन धीरा तुम तौ ज्ञान वान रघुवीरा हम रिपु हरी गई प्रिय नारी पै असक बहुं न
भये दुषारी करहुं मन निज्ञां मैं रघुनाथा सिय हिं लै ऐहौं हैं निदश माथा सोरठा प्रसकहिं मीत बु
झाइ सुख धुन्ना इ हरषित भये बोले पुनि रघुराय कहहु मीत विरतांत निज चौपाई कहें सुग्रीव
बालि मम भाई करत रहे हैं तिन की सेवकाई मय सुत दैत्य मायवी नामा जाय पडु चहि त सबके धां
त मा सो पुनि बाली कहें बांना कि स किंधा कहें कीन पयाना द्वारें हिं सिंह नाद सो कीन्हां कढि बाली
ता सो जुध लीन्हां जब बाली को मुठि का लाग्यौ व्याकुल है सठ घर कहें भाग्यो धायौ पुनि बाली तेहिं पाछें
दौरे मम हं मो रहसौ आछें सो भय भाजि दरी निज गयऊ वली वालि तब मो सन कहेऊ मैं भीतर सहि षल

कि०कि० ग्रीवंवालिकोंत्रासा मंत्रिनजुतरहइनवसजनसकासा दोहा सोलषितुम्हंहिउराइमुनिचीन्हनपठसोनाय होवउ
२ भागीप्रभुलषौभस्यौसुषनकेगांथ सोरठा नाहकीप्रियनारि वालीवलसोंहीलई धर्मनसेजुवरारि उ
चितसषसुग्रीवंसों चौपाई नेऊंप्रभुसेवकाईकरिहें तवंसंगजुवंतियहारिहिंमारिहें प्रभुकहंकपितेंमो
हिपियारा कहिहोंजोनेंमनहिंविचारा हरषितहैहनुमंतसुजांना ममकांधेचढियेभगवांना ऋषसकरि
डरहुंनजंधकपिलीन्हा भूधरतेरपथपांनहिंकीन्हां परवतपरजहंविसततवेठा गयोपवंनसुतमुरनिधि
पैठो तरुतरराषिउहुंनहंहनुमंता कहंसग्रीवंसोभोइषअंता उठहुंवेगिमेंप्रभुहिंलैआयो सुनिहरषित
है कपिपतिधायौ रामहिंनिरषिमिलोंसुषलीन्हो अगिनिथापिपुंनिमीतहिंकीन्हों दोहा रामकीन
नेहिंमीतनिजभोनिजमनसोंरास निरषिभावअनुपंमपरमहंनुमतभरेहुलास सोरठा सषाजोनिहि
ग्रीवं रघुपतिकहंआसनदियो हंनुमतसंनिसुषजीवं लषंनहिंआसनदेतम्भे चौपाई लषंनसवंदि
आसंनदीन्हों आसनसुषसोंसवजनहुंकीन्हों पुंनिलछिमंनकपिपतिसोंवोलें निजविरतांतआदिसोंवोलें
सीताहरनसुनतकपिईसा प्रभुसोंवोल्यौपदधरिसीसा हेरिहोंमैंसियसहितजमांनी पुंनिसहायकरिहोंस
वभांती कछुविरतांतनाथमेंदेषा कहोंसोईअवकरियरोषा येकसमेमंत्रिनसंगलीन्हें रहेउसैलपरआसें २

ना देषहुंकोहैंदोउबलवांना दोहा बटुरूपहितिनिकरकहंजाहुकहेहुमृदुबैन होंहिंबालिकेंमीतनतौमो
हिवंगायपरुंसैन चौपाई बिप्ररूपधरिपवंनकुमारा आयोजहंदोउसुछबिअगारा सादरसिसनायकरजो
री बविछकिकिपविनतीरसजोरी कोहौंपुरुषसिंहदोउवीरा मुनिवेषहिंधारेधंनुतीरा निजदतिकर
रुंपवन्नसितनतोका लषनदेरुंमनआनंदथोका पुंनिकहहीमतिकेंतिमिरारी आएनिजहठनकानम
धारी केनुमईसपुरुंमिहुषदेषी आएषलदलदलनिविसेषी फिरिफिरिमोमतितुमकहंजोई निश्चै
करनिअहहुंनुमतोई छात्रियतंनईसनकारूपा जाकीलीलापरमअनूपा दोहा जाकीसक्तिसम
र्थसवउतपतपालननास अकपअगोचरजासगनिरायकपरमहुलास सोरठा हरिकहंतलछिमं
ननान कपिवरुपहसालनकुशल समझिकरहुंनुमवान वेदसोरनिजतहदेगुंनि चौपाई तिनकहंदास
रथीहमदोउ रामलषनअसकहंसबकोउ सीयसहितपितुसासंनपाये घरतेसघंनकाननहिआए
इतिनिसिचरहरिलिएवेदेही सोजनविकलफिरिएहंमतेही कोहौंतुमअबमोहिबतावो लनतसच
नकपिआनंदछावो पुंनिपगपसोपुलकिअकुलाई मोतिरोगनिसोकहिंनहिंजाई कहसोनाथममसुर
तिबिसारी बनवासिसहोंकठिनदुषभारी पवंनतनयमेंहोहनुमाना गर्भअंजनीकोंजगजाना नामस

कि॰ कि॰ श्री गणेशाय नमः दोहा जै गुरु सिय हरि सरस्वती जैं कपीस हनुमान जै गौरि हर गजवदन जै सब संत सुजान ॥
१ १ अरि कुल कुंजर केहरी सोउ अति बल ज्ञान मुनि वेष हिं आयुध लिये आगें किए पयान चौपाई कछु चलि
म्नुपंपा सर देखा बोले तेहिं अति अम्रुत लेखा बरुण को पिजल निधि के पांना करि विरंचि सो विनै सुजाना
मुनि अगस्ति आसनन निसरेहीं धौषहर च्यो उदधि रिसि नेहीं अवं निउठावत आदि वराहैं धौपहमों अंबु
धि अवगाहैं वो विधि अरविंदन मकरंदन चंद करहुं केलि मन फंदन मंडित पल पल कल अलि अवली
सारस समर सारसी नवली मत्त मराल मरालि कुबोलहिं चलित जल चरन लहरी उलोलहिं परसि समीर
उठहिं जलसीकर तेहिं दुरदिन सोभित अति हीसर दोहा कीउ हिं सब सो मुनि नतिय करि करि जल तट
भीर अंग राग के संत समन परम सुगंधित नीर चौपाई कहुं नहाहिं मुनिन के मंडल भरत नीर धुनि
करहिं कमंडल कहुं कहुं मुनि वर वलकल धोवैं पार लसलिल नीर तेहिं जोवै केत किरज वंधि कुल
रेनहैं मधुकर मंडल मोद लेनहैं इमि कहिं कियु विलाप न हरामू फेरि चले कछु करि विश्रामू वन छवि
निरषत होउ सुजसांने रिष्यमूक पर तन नियरांने नाहा सि गिरि जेन किह यीवां चले उ भागि अति
संकित जीवां जानि सो जिये कह हनुमाना उनि आगें कहं करिय पयानां तिन कहुं तुम्हहिं जाहु उ धिवां १

ङ्गिगपरत्रै विरंगकंचनवेवसैं सोरठा रामसरासहसोबीर रघुपुजां आधीकरी अवधेसहरि
ममतीर कैसेपैधंनुतेकरहिं चौपाई असकहि छाडेउ बानप्रचंडा चलेबोरहेतजनुज
मदंडा चारिचारिदुआजिगिराये आरसूतरथसहित तरं भाये मजाकाटिप्रके छिति
पुनि ढुधी येकबांनबिसतउरमेघो नवधापासो अनिरिससिधारे तेहिंकेऊरसरिव
हुसरमारे कारेत्रैबाननसिरतीनौ नमसुरमुनिजैजैरवकीनौ सकलसैनरूतबर
अवलोकी अचरजमानिमभो छंनसोकी निरषिरामबिक्रमकपुत्रसो पुनिरिनं
ग रंग्यो अतिलस्यो कोपिविशमवहुंबानचलाये दिसिअनुबिदिसिगगनछितिछा
ये छंद सरधरदिसि अनुबिदिसि घररथमंडारिकेरेंनलग्यो वहु अस्रसख
निकलननहरिहिंहेयार चरननरसपग्यो पुनिरामतेहिंसरकाटिनिजसरचरषिर
इमिकोतुकथसौ आकाससविन अनुकासतरनिप्रकासबिनजगनमभन्यो पु
नितन्योघरनालीकविकरनि अप्रधचंडनरावरें वातरकरनडुंरंत्रवकाहु विविधि
सरजुधमावरें वहुबानपरजेबाननमंड़ारमानविराजरी सेउलरत अनिवलवां

आर: नमानहुं विन्नवासबछजहीं सोरठा छायेसर आकास अंतकसंमयसरसमिरिसर उरमहंकरि

१९ आतिश्रास रजेमनावंनरामजे चौपाई रामहिलखि बलनिजहललधालकु नयेश्रमित

मानौगुनिबालक सिरनाइकरि आतिजुधकीन्सो हरिहरितेहिलधुमगसंमम्मान्यो प्र ठा

नुसनमसुधायोसबलकैसें चलेपतंगअनलकरंजैसें निजसरअंधकारकरिजोधा तें

न्योपेकसरवरकरिक्रोधा सोसरधनुषकाटिमहिडार्यो सानवंनतकिमरमारिमा

र्यो काटयोसरसरसरनिसोअबवनर विन आवरनसोरअतिरधुवर जो आगस्तिमुनि

सादरकीन्हो सोपनुषमुजनतपुनिचहिंकीन्हो धरिधनुपरमक्रोधकरिधाये धुजाधर

निमहंकाटिगिराये छंद सोधुजाधरनीमहँगिर्योमनिजरहितसुवरनकौचन्यो जंनकर

नरामसरसरसविता अंवनिडत योसबगयो पुनिक्रोधकरिहनिचारिसरखरविपुल १९

सरसरिसिरहंने रघुबीरहंनिखरनीरसिरभुजउरउरहुउरसुखसंने हरा लसतिहरीने

सियलखंनहिविनैरबनचरराजनरनमहरामकोवंसनआहनअरविंद सियसोच

रतकराहरंनसधनहिसैनसिषाइ चलेरघाररबंनसरतखरसो श्रीरघुराइ सोरठा

पुनिहनिनेरहतीर स्यरणलूनहकुरसधंनु कारे श्रीरधुवीर नमसुरमनिजेजैकिये चौपाई गहि
करगलषडेषरकेसे सोरतकालरहेउ धरजैसे बोले राम बिहंसि सुनि रेषल मुनि अपकार
कीनतैजतरल इसद्रुहेरस्तुजंन अपकारि लहैनासमोउकसेप्रकारि लोकबिरुद्धकरम
जोकरई तेहिं अहिंसमगुनिसवसुधरई कामलोभमदहिंत अधकेरे श्रोर असंनचंमे
नोरवुमेरे सुनसठरहेउकमुनिजेरहै केरअसंनहिंतसवकोचरे कीन्हेरवलतिन अप
कारा केहिंविधिसेरहैतोरउवारा अघनिजफलजनकालहिकरे विषघोसेजिमितु
रतैमरे छंद जेपापकरमा अहितजग कोउंतिनहिंमारनहेतको नयसेनमोहिंचनवासपा
पनहेतधरमहिंसेनको अवनीचलधुयेवांनतोहिछितिछहिंहैंनिजनोकमें जरंमुनिन
हनिरनिनेपठाये जाइहैंतेहिंलोकमें करनहारसोलेरकारि अवकारहेउनवसीस छनि दोसा
वानीरधुवीरकी बोल्योनिसिचररेस चौपाई ग्राकिजनिसिचरहंनि सुनुराम् निजव
लबलगहि कायहिगाम जेवलवांनसोतजगमांही निजमुषनिजवलवरनतनाही
लषउंनमोहिंगसकरधारी षडेवडेमधर अनुसारी तुम्हेनदोषकालमुष आते

आरं: ताते जो ईसो ईकसै जद्यान होवनेकनहिचहैं करैजेउपकुजन पानेकहैं सविता असल
२० लहुषयायो ताते मोहिषानन हिलगायो असल हो हिरवि जुध रहिजाई तपदेहैं परमो
हिं विचारे तो हियहाई काल के पास पोछि सैं निज वीरनतिय आंस ॥८८॥ असकहत
पेऊ जीमु दहीरध कुलिस सम सो हतभई विनतहु न जाइन नरसु गतिरधनाथ परे आ
तुरगई प्रभुताहि येकहिं जीरकारयो विहंसि मरउ ऐनियो कहयो रैनीचतैं अचकल
गरजनगहे चलन तवनहिं रह्यो हेत निजवीरनातिय आंसु के पोंछन को प्रेम कीन
सोमूढ़ो अबवदेगयो हैते चलको होन चौपाई जो नीगसवल हियप्रन लीन्हा सोविस्वा
सघात तुर्व कीन्हा अरे दुष्ट तव प्रान नहि हरिहों हरमुनि सबैं अभै अबकरिहौं परिहे २०
छिति रज भरि सिरलागे सोबहिं जिमि नृपति चैन रागे जनस्यान मुनि अभै विचरिहै
गाहि मम सर नैहिं जयत पचारि है ते रहेकु वकरि सब तहुं बंमारी तव असपुरबविचारवि
चारी सुनत हि खरउर रवषरजमो खरवोलन मो को पहि भयो गरबमरे उमभा बातजे
सो राजेनसों कोउ कहत न ऐसो जाके सीस काल जब आवे ताको ऐसो रमाषवमावे

ठेर पुनि निज हृदय अति क्रुद्ध ह्वै मन महु विटप उपारि कै पठि मंत्रनि हिं अस्तुत स्वकारि ह-
रि ओर हंनेउ प्रचारि कै हरि कारि तेहिं तिलतिल हि करि सर सहस उर मेरु तमये सोल
३ सो कज्ज लसे लमान हजे कर नाज तन ये अति गरजि धावो राम सनमुष नरल हरि
वर सर लिषो करि क्रोध सो प्रलय गिसं मतेहिं मा करु द्र्यंहि मरहि यो जरि ति-यो सो
ब्रह्मांड समन हरि हृदै समसो हत भये यहि भांति प्रभु कौतुक हि कारि त्रैषरि मरे निसि
चर लये दोहा वरषि सुमन हनि दुंदुभी सुर कारि जे जे सोर अस्तुति करि गमने सकल लषि
प्रभु त्रैनुपम जोर चौपाई पुनि जे हिं पल मुनि गंन सब आये जत जागासि करि अस्तुति भा
षे पुनि वोले कियहु सब हित सुषारी अतिवल वान निसाचर मारी यहि हेत मुनि तुम्है ले
आये अब चकरि हें जप तप सुष पाये पुनि तेहि समै लषंन जुत सीया आये निरषे प्रभु
कमनीया लसहि स्याम तन नहु चिर रुधिर कन मनहु नील गिरि इंद्र वधु न गंन चौ ठपि
धनु षय चरकर सर फेरत मुनिन्ह याल द्विजंन सो हेरत पुजहि मुनि गंन निकर प्रवीने
नरसिय लषंन प्रनाम हिं कीने चौ लहिं जहां सियाँ समुह तई विगत दिवस रजनी नरे

आरं आई सेत बंसनि छमनि पवंन तिन अस्तुति सांत तुषार तउ न सुष्यो सीय को कमल भाउ सिंगार
२१ गो त्यहि तिन साइ युनि सीय स्वंसन जत राम पंचवटी मंह आइ करि करन लगे विश्राम चौपाई
भागि अकंपन पहुच्यो लंका प्रविस्यो रावन भवन संका सभा मध्य लंकापति मंडित तेज रजा
रतसनि अषंडित करि प्रनाम उ बहुरि कर जोरी बहुरि जाना वत भो कमपारी जनस्थान के
अस्तुरत तुम्तारे षरजुत पहु समगे सब मारे भूरि भाग आयो लै प्रांना सुनि बोल्यो रावन रिसि
लांना कहै कौन की मीचु तुलांनी जो मो सो रिपुता अस ठांनी निज बांइं न वल पवंन त धारे
निज को धागि आगि रधिजारे सक्र सहित आठौ दिगपालो रन मंह हरतो होइ विन कालो
होत करहुं मो च हीं मो च मै जव हि धरौं धनु लोघ जीतन हं नर नारायनहुं को पिक स्यो
इस भाष चौपाई सो कहन लाग अमेजा पाउ तौ तुम सो ते हि वरनि सुनाउं पायो अमै २१
तऊं मै याम्यो कंपन कहन अकंपन लाग्यो दसरथ तनय नाम है रामा स्याम सरुप प
रम अभिरामा सरह चंद्र विंदक जेलि आंनन हे अजांन भुज विच रज कांनन जस वि के
मयरतापमहाई पठन रकां हंकंड जंन तिन जाइ सुनि उसांस लै कहत दसमाथा पनने

अधिक कुतारथ नाथा पूछैं तिन तिहिं जिन रिविलतौं ल्यो सोमन गुंनि युंनि विरं सत बोल्यो
अंहै राम येय रघुन धारी धरम बांन जुध विक्रम मारी सोरठा अब्बसब्व मरैं नि युंन अ
ति तै सरिता को पंथु नाम लघन उं उंनि चयं नजोर अंगल भयेकेध चौपाई बांन न चंद्रै
नरत जारे प्रांन सरिस प्रभु रहत निहारे तन सिति जत हेउ सो भाकर कुरकाल संजने
बांन रघर रहैन असुर अमर विधि हरि हर राम अकेले हिं न्यो सरस्तु घर चलत राम
सरमै प्रभ देषो चल यत तापु आति अनुपम लेषो भागहिं निसिचर जे रिजेहि मारग तै
हैं तरं लषहिं राम करसारंग संनि रावंन तर अति रिसि सानो कोसोज हृकोहै करडंय
प्रांनो सो कर तिन कर बल हति लीजे यंनि जो भावे सो प्रभु कीजे कपि तन राम हृदाि
अजीता काल हृतौर जासु भय भीता सोरठा उलरिव तावै गंग निज बांन निकरि जो
चहैं करहिं अकास हंमंग अंबनिताविहिं नषतसव चौपाई चाहे सरसो धरनि उ
ठावै व्योम धरनि छिति ल्यावैं पवन नावैं चहै तो जल सो जगत रिंषोरै पेलास के लस
मद्रमि फोरैं चहै तो वायु वेग रहत बांनन ठनमर करै विसा विन प्रांनन चहै तो जल सो

आर:
२२

बैसरहे ते बैं चरै तो जल बिन जग जनहि यो धैं चरै तौ सरसों जग संधरैं बानहिं सो धिजियाबलनकरैं बैन
रि तुम्हरे जीतें न लायक सुनहु छमा करि निसिचर नायक जरि सुर असुर मल बल लरैं तउ ए
मसरम हैं सब जरैं तेहि के बध कौ एक उपाउ मैं मन गुन्यो कहै सोइ राउ तेहा सुठि हर्र जेहि
नारि प्रिय परहुउ था पवि चारि बिनती प्रभु सुनि सो केजुनतता जैहें प्रान बुराति चौपारै प्रभ
त रावन के मन भायो आयसु लहि सो सन्त सिधायो ना हीसमैं सुपनखा आरे बैठो ल
घो सभा निज भारे राजत रावन कनक सिंघासन सुबरन बेदी मनहु हुँ सुँन बिलु चरुजं ना
मर्दउवज्रधर लय पहि लगे उर अैरावन रर अजे असुर सुर रावन वैसो धरेस रीरकालजं
नु बैसो सीस बडे श्रिंगन अनुराती मुकुट रतन लपनर तन धाते नीलकमल निउति अरिमु
ज बीसा सैल मसा समनै रस सोसा छत्र चमर आदिक बहु लीने सेवहिं सेवक मन पग तिने
तेहा जीते उनागन असुर सुर रलिप उगर कैलास धनुर्जीति परसु पकालि पो किय नर २२
नु वैन नास चौपारै निज वाहु न जो लसि सिर विरतैके निज बल जो तिलिपो सबलो के निसिच
रितेहि रावन पर परी रावन रुधिर रकर हमारि हिमरी नारि उदा पो निसिचर भूपा का रूपा कीन
को तोहि कुरूपा कै धों लोकपाल भर कोई कै सुर असुर नाग महं होई बेगि बताउ छनरि

मरेंमारौं कोउनरिसकै जबहिंधनुधारें सुनिबोलीसूपनषा रोयत तुम्हैमत्रुरिस सनिसिसोयत न
नारिनचसविनदल्तनयनजेहे नासकुबारियढिकरलतचेनरे जनेषरदुष्वनजुतसेना मुनितप
करन सजेजुतचेना सोरठा रामवषवनवलयारे सुरनरमुनि सववर्मे जमे सबनिसिचरसमु
दाइ हनिहैं येमेमनगुनहु चौपाई योल्पीएवननउरमैयारे कोहिहितहेनेउसोकहुसमुभाइ
सोवहसयंचवदीमैगइ तेउराजिवदृगदेषनभइ तिनकेसंगनारियकहेषी चैनुपंमतीनि
उलोकविसेषी तुवहितनारि रनमैलागी लषन हरीनासासुनिभागी आइषरपहेंसो
चढिगयो रनमहँरामतुरतसेहिहयो रामबानचललतहंमेदेषो तबतेमतनसवनिसिचरले
ख्यो चहेतोजारिकेजगबेसा आइपसमरनरहिसंदेसा कोनिहुभातिमिलेजोसीता तब
तुम्हसीजीवनकमनीपा दोहा समरथनहिंतुमजाहुकरहुकरहुसोयेगिउपाइ जातेआवेंसि
यसदनडषिनसत्रुमरिजाइ समाधानकरिभागिनिकोनिजमनकरतविचार तुरतेन
अंतरपुरगयो गुननतमयोमिनसार मोसमषरदूषनवानदलसहितहनैनरयेक ऋसको
उकैहेंकेरमतिनुहिंलहेविवेक चौपाई नरहैनहिंपरआतमजरें चनलभाउतारेच

जोमे

आर: हैं जो रघुवर पद रइ सहित सही तौ तिनके करमी चुरि लसही कारि हैं तिनको राज जो नर तौ का करत
२३ च काज भक्ति पंथ अति कठिन न करि है कै करि विरोध अवतुरन हित नरि हैं मन क रम मम
तपर दृढ़ करै मोहि हे नि हरि भु वि मारहिं हरै निह्चै करि चा ढि रण वल धोमा गोमारी चनि
केन सको मा लखो जाइ मातिच सुरा हि जय जय रमण चर्म लि धारि सज्जन नेम व्रत निसव की
न्हे मनु परई स चरन मन लीन्हे सोरठा कियप्रनाम कर जोरि लासि निसिचरपति शजि पुनि कह्यो
माग्य मैं मोरि कै रिहिन आउब मो प्रभो दोहा कह्यो निसाचर राज मै औं रत अवगति तोरि राम
कीन श्रुतिनाथ विन विन अध भगनी मोरि चौपाई नन स्यांन के वचेन कोई तुमहूं सद्य रि सुनी
सो हेरै असक रिकछु हरि नि लकी न्ही दृढ़ विरोध मरम तिन रिषी नी कउ मारीच स हो परे
मारी जगत बलमा पा सं मन तुम्हारी दोहु कनक मग रजत विंदु कारि औरो चित्र विचित्र रूप थ २३
रि काही नि राखि तो रि निह्चै लिया पकर तु मग यह अति कमनीया पकरन ता हि दुनौ ज
व औरे हरि हैं मेसि पथ्यै दुख पैहैं तिय वियोग कलतिन कहं मरि हैं निसिचकुल सहन मे
टरि हैं सो सुनि उर मारीच कोइ भयो एक रकर स्यो अधर मुप से खो दोहा राम पद कम
वि हित जेहि सोच्यो अंजुलि जोरि आपं एवं न रित वपं नधर्म हिं नीति तिनि चारि चौपाई
ने

प्रियवादी जगसुलभमहिरावंन दुरलभ अप्रियपथ्यसिषावंन श्रोतावकता दुरलभ तिनके न्रपतेस
तसचीन तहि जिनके तुमचंचल विनद्रुतनयनन्हे धरमलीन अधरमहि छै नही रामधीर धुरधरम
हिधारी हेमरजाइ सपयोनिधि मारी जो भास्कि छै गुनन नहि येको सीलवान अध धुपउनुनेको
सवजगहितै अरितन नहिं चोरे द्रुय अनंदहि सिंधुउमारे सनिपितुवचन करनवन आये कहि
असस व विरनतो तन सुनाये वरषंडितसवगुनन तेहि मांरी धरकस अजित रद्रिपहुं नारी तेहारे
जनसंतनविक्रमी परम प्रतापी वांन तेहिनिंदन आपकन हीतुमरसकंठ अजान चौपारे नि
जतेजरहिरतितसिपरहै चहे तौ तेहिने जे हिज गइहै रावंननते हिके हि भांति नरहिरो परसनति
नसहवेद्रवजनरिहो सचनिसिचरवरकरहरडकल्याने जेहिमहं रामको पन नहिठानै को यिनरहित
निसाचरधरनी करिहैसति मानहुं तिनकरनी सियमैं निसिचरकुलकी घालक सो कनु अ
स जेहि करैनवालक निरत विसंन विन अंकुस कांमी सो करु होइन जेहि वरनामी त्वं
कस कुलनतय होइननासा सो करु जेहि पुररहैविलासा न्रपति कुसील कां मरत तुम
अस वुधिविन पापी मैं त्रिन केयस सोरठा सजन अयनयोरेस करतनास सोतुरतही

आरं: गावत रहैं सुरमेस निगम चारि मणि विविध मुनि सेस बांन ज्वाल नई धनु धनु धरें नमुनि हिये दि
२४ सुरंग रघुवर कोप के सांन मरें सकुल न सोइ पतंग चौपाई अप्रेम प्रबल राम हिं जांनो
तिन कहं असि पायरमा प्रिय मानो रत्नाकर हि धनु बलै ते नो ते हिं के रन उपायन कोनो
तुम कर रन मह राम जो देषी करिहो तुरत हिं अंत विसेषी मंत्र विभीषन परम सयाने
नीत धर्म सब तिन के जांने तिन सों पूछि मंत्र अति नीका करहुं राज सो रमन मह ठीका
रघुवर बल मैं देषेउ रावन ताते तुम कहं देत सिषावन येक समै मैं अति बल सीना धरे
हे सेन्य धर हि समीना चरि थलि पैलो कैत मै गेउ मुनिन निरषि सो जन करि लेउ से ता वि
चरहुं दण्डक वन हिं मष कारन नृप आये कोर गाधि सुवन दसरथ पति भये अति भीषन मो हिं जो २४
र चौपाई मार्यो दसरथ घरें सुत जाई रघुवर अस सब तिन रिसि वाये ठान्यो
(मुनि मष से) अंत लेउ मारि वास वरिषउं न कछु अहै के विधि भीम रजनी जस लहे
मो रिसि सैना जुत संग लै जारे करहुं अ मैं मष मुनि तिराई मुनि कारसेना जुत तनय रहे रा
म हि देहु जगत जस लहै वोल के राम न उचल वांना तिनके मारे न माहं सुजांना अस

धरिमुनि सेउ बंधु ले आये अस्त्र सस्त्र सब तिन्हहिं सिखाये ठान्यो मुनि मष रोम कराई धरे ध
नु षता कहि सेउ भाई तक्यौ कुवेर सेउ तहं मे जाई अति बल वान अनूप लोनाई सोरठा
उचि रचौ रधा रन किपे चाउ काक पथ वार कमल नैन जुत भ्रमन निवालक अति सुकुमा
र चौपाई सेउ सुंदर तेहिं अवध निविचरसी निजउ तिवनहिं प्रकासित करसी बालक वि
धुरंखन ते सेउ बालक महाराज सम मैं मुनि धालक कस्यो रघि मैं सोसहि कीन्हे मनि पेम
ले सम सय कल्लीन्हे तिनहिं निसार स्यै मे धायो रामको पितु वचन चलायो सरितसु वा
हु सैन मम मनासी एक वान पुनि सु निविन गासी मोहि मसा रघि मधा गिरायो केरिका
रन धो युवा न वचा सो वसी यार मनहु सुधि जव आई तुरतहिं आयो लंकपराई त्यागहु सि
या मिलन की आसा तेहिं विरोध न ते विपति विनासा सोरठा कीडा रति मन हनि पुन सयनि
सिचर कै है नास कनक भवन निन केठ सहि जे मसला तिसारे षास चौपाई करे अंग आकु
ल सर लागे तिय जुत तिय हंत ते सेउ भागे अरु सरमे लंका निज लोचन लषि सेतु मत्र
निज रन्म रिसो चं न विन अपराध हु सोस तिसारे जैसे निसिचर सब संघारे पर नारा फेर

चारः नसमाना जोंनहुसां चुयायनरि अभिमाना कुलकलस ताजि प्रमानरिराजु मित्रवर्ग अहसब
२५ लसमाज रनहिंजो चेहहुन जहुविरोधा स्वामी सुनहु त्यागि अवकोधा जोकरिहहुन
रिसिपल सुलेखी तोजेसोनासिसकुल विसेषी केरिसुनो एककथा रमारि जगतकाए
सगमगतनुधारि दोहा दंडकवनमहफिरहुमे क्रिपेमयानकुरुप मारहुमुनिजननिकरत
हनिरध्यो कौसलनृप चौपाई रामलखनतापसधनुधारी सियसंगफिरहिंजिंनरि
तकारी तपसीक्रिसरहिअंगयहित्याने धायोशूर्पणखेरहिमाने रामहुतीनिवानरसिमा
रे वज्रसदृसतननलजेहमारे जोवोदनहयाकरिहीन्हो तिनहुनहु कोजियहरिलीन्हो
नयोत्रासितजोसवअभिमाना तवनेयायत्यागनयठोना नरुतहमनरघहंमेरामति
धरेधनुषवलकेल अभिरामति यासहिंधरेअतकहिमानो नृपचहुकितलवमयठो २५
नो हरितहुवरेषन भैयांउ सपनेलखिअ संगलोजाउ दोहा नामरकारारिकसुनत
रेफहुलनिमयहोइ मैजाननतहोंतासवलतिन समनहिजगकोइ चौपाईहनहिंसनि
मुचिवलिहुकिनहोरे हे अज्ञानकरेजधमोरे ताकीकथासुननजिपमेरो दोहनवरनत

अकुलाइ धनेरे ॥ दो० ॥ जो मन जीवन चहिये तौ तिन कौ कछु कपान कहिये ॥ काम विवस त
बन तिनी जई ताकौ उचित दसा सब भई ॥ ते हिं संतापु बरु दुष्ट न कीन्हेउ ॥ तिन्ह हि राम रति
जे गज सकी न्हेउ ॥ यहि मह राम हि हि सहु नोही ॥ नाह कतेस करहु मन माही ॥ रावन मन सि
ष भावन कैसे ॥ मरन चहत तैहि सो बधि जैसे ॥ रावन करहु न भल मारीचा ॥ निरफल व
चन करे तै नीचा ॥ दो० ॥ मैके सेइ न हिं करइ जो तिन त पसि न सो साम ॥ है मनुष्य कि सिजी
तिहै मो सो करि संग्राम ॥ चौपाई ॥ ते प्राकृति तिय की हठ नि बीनी ॥ आवे बन हरि बुद्धि मे जानी
तवे संग तिन की प्रान पियारी हरि हौ उर निश्चै बुधि धारी ॥ मै गन दाघन पूछे इतो सो ॥ काहे य
ह सक्नी बसठ मो सो ॥ पूछे जे मै बी कर जोरि ॥ विनै करे मद्रुता रस बोरि ॥ विगत मान कर कोह
नहि कहै हित बोनी कहि रुष चाहि रहे ॥ नृपति याच अंस ते होई ॥ अगिनि हुदू सासि जम
बरु नोई ॥ ते जयराकाम अंन दकाला ॥ दुड़ देव अहन सम प्रसन्न तता ॥ उन पहि चेन के नुय
पाचो ॥ नृप हि येये उपजे सो चौ ॥ दो० ॥ नृप पूजिये जो गहै सबै काल मारीच ॥ धर्म न जाने
मोर घस करे वचन ते नीच ॥ चौपाई ॥ करु संताप अब मग तन धारी ॥ बेगि लेौ माउ धिरे

आरं: २९

रंजुमारी सियहितराम धरनजवधेहे लगिपीछहिं इहरिकाढिजेहे तवदेरेतमरिय
सियांनी धेहेलछिमनमतिअकुलांनी तेहिं अंतरमयंतवनहरंजेहो हरिसीतहिं
लं करिलेचेहैं अहोजोममकारजसाधी रहौंतोहिराज्यमेआधी जोनहिंकरिहो
सठममकाज करिहौसिरकपांनतेआज उभयभांतिदेवाचेनहिंवाचे इंहांतोहिमेमरि
हो सांचे मनविचारजोनिजहितहोई करिनिरचेपुनिकरतेसोई सोरठा मैंरनजा
नमारीच कोपितहिरसिकरतभो कोनचलतापोमीच मोचुहारतोहिरसवचन दोहा
ढेतेरेरिपु सांचहैजिनअवसीसिवहीन मोंहरनलायकसचिवतेमराकुमारगलीन चौ०
जोनृपतिकछुकरैकुकरम तासिंनिवारवसचिवनधरम मैंतुमसोतुमममहितुनायो
सोतुमरेमननेकनआयो राजप्रसादसचिवजसपावे करेकाजजोतेहिनहिंभावे २९
नृपपापतेंप्रजापापरत नृपतिपुन्यतेप्रजहुपुन्यमन नृपतेधर्मधर्मतेजसहैं सोतु
मनीतरीतिकेवसहै तातेनृपरालियसवकाला चलंननपावहिंनेकुकुचाला ति
हं नयकुंमीपतिजो कोई तासोंनहिंयालनकछुहोई करहिंप्रजानेहिजीवनआसा

९ नृपनीति कुलसज्जन हूं नासा सोरठा सोन चरत इमि नाह नीति साजसम हरजस कथा कस्यो
मृगा वटि फाँस संग शृगाल को पाइ करि दोहा भयो निसाचर नास अब हरून न रघु
नो हियाई कर्म प्रबल प्रगट लख्यो काक ताल के न्याय चौपाई अब हे मं कोन विचार
बताबेन सोच नीपतु मही समिति रावन लपि मोहरि करसर धनु धरे मे किति किकिएम
करमरें मोहि तो तम विलोकत मरिहै पेरितु मैं जतसैं न सँवरिहै जो हितसी षउर
रहिन हिधरे सोउ एवंन उचितै करौ जाके कालसी सपर आवै तारिसु जनकी सी
घनमावै अस कहि पुनि मन गुनि मारीच उभै भांति देख्यो निज मीचु नीक विचारि
रामकर मरिहो पुनि कर अवध्य सासन करिहो सुनि सो रावन उर सुख छयो पुनि
पुनि मिलत करत अस भयो दोहा कसन कहो यहि भांति की बात विवेक विचारि
अब तुम आये प्रकृति निज भ्रम मत सकल विसारि चौपाई वरपि साच आनन जोरि
लागे चढउं जान पहितु मवड भागे मैं तवै सारथि कर मारि कोरिहो छन मह उरधि
अपार हिं तरिहो अस कहि कर गहि तारि चढाई हांक्यो रथ सरमन उधाई रावे

आरं॰
२७

नये चवरी करि आश्रम आयो मृग विचित्र करि तारि यत थायो कनक रजत मनि मे छवि छायो सो मृ
ग कुटी निकट जब आयो ताहि विलोकि राम मुसकाई करुणा सिया सो उर मधु घाई ते
मारि हरन को निसु सरूपा आवत है निसिचर कुल भूपा तुम अब रहहु अनल महं जा
ई राखहु छाया सिया पावनाई करहु या मत नर बर बानि मम सो सब नर करमा नि स दसमे र
सयुं धरे पुनि युग रेखन आनि चौपाई तैसहि कीन्ही सिया सयानी लछिमनहु यह
बात न जानी जो माया सिय सी पवनाई सो हरि सो बोली मुसकाई मनि मे मृग विलोक
हु स्वामी आसन निकट चरत लघु गामी आयहु धरि जो राखि मन भावन तो की जम
ग सोहि सुसावंन लछिमन कै रा सिय निकट रहि जाई धरि धनु चले राम छवि छाई लखे २७
न कस्यो पहु प्रभु मारीचु तुरत चलेउ न आयह करे मीचु राम कह्यो जो मृग तो धरि सो जो
मारीच हि तो यह मरि है सो माया पति माया मृग पाछे दोहा जरा जर गे है लखमन मृग
अमृत विंदु सो तेर वन वो थिन आकत चले राम रंमि जाई चौपाई मृग कहं चरत नि
करे को जाई कृकृ किराम लखि हरि यहई छपाकि छपत चहं औरन सारी सजे होत कई

मुकत

ननरजनमारी कहुँकारनपुरसोंपनुआवै निरषिरामछविछकिछकिजावै कहुँ अध
चरेबिनमनहिडारे रामनहिहकिहकिमुरछिनिसारै नभचढ़ेंजारधरनिकेनआवै पुनि
विधिकुरंगनरमनतरआवै प्रभुजेतरिंजो निनिसाचरधोरा कोपिरामसंनसरचरजोरा
वैचिकाननलोचानचलायो नेहिमारिफेरिवानफिरिआयो निजतनधरिकोहिलछिमन
पुंकारयो रामहिलषियरलोकपधायो तेरा परमपतितउधारजो कहतंहित्र तेम
हरामउतेहरितकरि उरि सबपावे तिगतिनिरकाम चौपाई आसकहति लछिमनपराषि
धनसुरगंन निजनिजभवनगयेप्रभुरिजमन लनिताकी अपनीसीयानी रामहुं
गनननलगे अेनमानी परसुनिसीतामन अतिसोची लोचितहै नेननजलमोची
असविचारिफिरिचलेवतो ही सीतउहेनिबोलीभेमोही लायलछिमनकारिमनहुं अ
नाथेसंकरमरबोलेरघुनाथे लछिमनघबरकारे आतुरजाउ लछिमनकेरआ
जीतरघुराउ सोयनपतरघुवरकैयांनी निसिचरकोउकीनसयांनी जोरघुनाथको
धउरधारे छैनतोमारसोत्रिभुवनजारे सोरठा नेकिमिसेननिवेन कोहिहंमरियुको

आरं: रिवै सुनजलुलोचननैन सियाकह्यो अनुचितकछु चौपाई बानीमैलछिमनउरधारै बोलेउतं
कितकरतविचारै तोहिधिक्कारचंडिकाआहू जोमोहिंअसीबातेंकहई असकहिपी
४२ रलखनपधारे देवकरवानसरासनधारे सूनजानितरनायसुवेखा आप्रोतवनसिपते
हिंदेखा सादरकंदमूलफलदीने विविधभांतिकी आतिथकीने पुनिकरप्रेमआवेय
तिंभम् तोलौमुनिकरियेविश्राम सुनिसियसोविप्रकअसकह्यो कोतुवंपतिकोतुम
वनरह्यो ताकोसीतासबैबुतांई मुनितेहिसारपुंछनआई छं० सोकह्योनातिपुलस्तिको
मैनामरावनख्यातिहै होंइंद्रनिहिचरनिकरआतिबलअमितमेरेसानिहै हितलेनआयोआ
यकेअवचालियलंकामेचसी तोहिसमपटरुनतहिंतासुबानीसीयबोलीजनुअसी रेरा
लेनचहेजोसिंघकोभागहिधुआडिगाल तौजानीनेहिंसीसपरनच्योकालतेहिंकाल
[illegible] आवनयमुसरधंनुधरेछंनैंदउदरहुनीचु मोडिगलखततिंहकरहिंजेरेबलतोहियसमीचु ४२
सकुलमुक्तिकेलेनहितरावनवलीसुजान प्रगटिहैंमनकरतमोसीयलंकलैजान चौ:
तरेकीछितिजुतसियहिउठाई चल्योतुरतसीरंथहिंचढाई सियहिंचल्योलैरावनवैपें

बुधि लियें जात ते हि निसि जैसें हा प्रभु महा लखन पुकारे ते बन ता सिय चहुँ ओर निहारी सिय स्वा
रत पुनि सुनत जटाई कोपि नैकै बोल्यो चकु लाई पाम्ह हिय म्ह तिय लै नेकै न जन कै मोहि
देषत सठ जाइ न सबै ञ्ञसक हि दसरथ सुमिरि रिमि ताहे चति हि कोध बस भयो जटाई
परि के दसरथ सर्ति ख चढायो ते हि छिन के सैल सम भायो करि कदा इ कीन्हयो पुनि सोर क
ह्यो जात कर परतिय चोर इं इरे चोर लख बुयहि यो मोर कठोर मैं रहि ञ्ञकुसे मै चंदना
चल रहो नाम जटाय घंडु ञ्यो कारिगु से न हि लिय म्हि हि तो मम चंड तुड विषंड तन मुंड नकरी
कछु है रिक रसिष मोरि देषल हो डि पातिब्रत करी होस पुनि रावन करे चोन्हि कै वो
ल्यो को पिजराय तुम बूस्या के वसमर चोरी न हिलु राघ न बाघितु पितु मरन नीच सिर के
रिहै रेमन चीस चतुरानन कर सोच मोहि किमि करिनै है सीस चो यारे का टि सीस नि
जई सरि ऋायो कहु के वंचे लाम उठायो जा के डर डरपत सुर राजो ते तुम चोरी करत न
लाजो तुम कतरं उचित ये न्ह वरन धीर आवन दहु होउ रघुवीर कहू दसानन नाहि नि
रासो मन मरे ते हि मैनाक विचार्यो मघवा उर सागर छपु जोई मम सन मुष सो गिरि कि

अारं: मिलोई वंदेसिगयेनागनकेघाये कोगरवितळेगनजरि आये तउनासंपन संमवलमेरो तोस्यो
९९ तोलनहिमजनटमेहे हंसिवोल्यो मै अवधपरिजांनो गीधजटाई अरेपुरांनो तेरा ममक
रतीरपुमांरधर आवततयागनयांन असकहिपुनिरथ धुमटचपलचलायो जीन कौ॥ म
सपाजटाईयुत्रासिय अवनेंनारिडेंवार पहुंच्यौमैयतिमीच संमनीचसकततनरिजाइ गरव
मेरे रसवधनेंजीतिजीतिसुररांइ अवजैबोसलकाढिंनरे गीधेगीधसो आर चौपाई पु
निकहरे बलधनरहेंढांठो अवसहुमोरप्रसारहिगाढो कारिदसोसिर चौचरिलेहो द
सोहिसियवतिनमेटनिदेहौं दतोतोरिरंनमरैपरचारी कैरेखुबीरघुवरपियनारि मैंआति
यकजवातैंनिसिचर सरवपुककवचजनलीनेधनुसर तउरेसिहोतवमनसाई जोसिय ९९
लागिभागिनरिजाई मोहिविलोकतासिरलैछम जाइकोसकरिसनहिमनेम मैरस
कधगहेकोअसा भागिनवचिहेषलअरनसा असकहियठिमारगजसिरेको दैत:
कौधिनदसकंधविलोको छंद चेतिकोपकरिदससीसधारि नजवीससाधनसरचलो
सरनिकरछांडेकोपिपक्षीयहसोनहनरहयो पुनिकोपकरिबगएजनिसिचरराजप

रें स्त्रांनुरगये छलचांमचोचन योपिचहुं कितचपलचपलासमनभपो देहा पुनिरवैन त्रु
ल तिचयेंगति धनववै विलगिकांन किपेचोघघरतांन सांतुरिमारेदसवांन चौपाई
ने सरघगउरपविसेकैसे पेदहिस्यालवेमोदहिंजेसे सियसोकितलघिगनेनवांना
नुदगीध च्यातिजहहरिठंना दसोचांयचगुलुगहिंतोरा नव़धनुलैरावेनवरजोरा मो
यितकेसरघरवेनकीन्हो गीधहिछारचहुं कितकीन्हो बांननवीचविरंजपतिकेसे
स्रोसोहतघोधकलतिजवेसें परनमारिवजपतिकिपजोरा सरनतोरिपुनिधनु
घरिंतोरा नैननतोरिरघघरसवमारे रतिरतिछत्रेचमरमारिडारे पुनिजेछत्रेचमरक
रलीन्हे चोचनरतितिनसिरविनकीन्हे छेदसनतरिकिपो विनमुंडरथकिपखंडखंडरि
तेउसो मारिगिसोरावेन लियेसिपजय नईधुनितरमेंडसो सवकेहेहिंतारिसरारि
परसगराजवडचरजकियो पुनिउठपो रावन चेकगारिसिपचेदरसरिंकरिपो ल
देहा पचकितजराईफेरिउदिकरसेपारोघकरिवेन रैकवुधिरघुनाथसरकरिहैजनकुम
सेन चौपाई सियाहेरनरेउवेधुनसतरिहै छ्रातुरनिजसरसांतोहि हरिहै त्रिभुवननि

आर॰ रि करम तै कीन्हे रिस माया कुल सिय हरि लीन्हे पलन रिसि तिन बीर की छुटै जांने सब ज
३० ग काहर करै सर हो हिं नो क छु पम्म जाई लखि ले धनु सर धरते उभाई सौरै छिति रघु
बर सर लाजे बचि है नहिं सल मो सन भागे छल करि गीध तरन छति मे पर्यो रावन
पीठि को पग करि लपट्यो चंगुल चोच हिं करत बिदरन मनहु महाउत लेत तवारन
पुनि धरि चगुल चे सउ बास्यो चरन पत चोचन बहु मार्यो छंद छति गीध कीन प्रहा
र रावन परम उर कोपित भयो रथ धरि फरकत खधर पापी परलने निसिचर रिसि छर्यो
सो गीध जग्यो बचाई छति छन घाई खातुर मे परि कै पंख मारि चोयन चोच उरत
र राखि पीठि हिं लपटिये सोरठा सरत कोपित खग ईस रखि रखि बिसो कित सिया लक
तन गहि भुज बीस जद्दपि करत छति नरलता चौपाई दस हु धाम भुज षग पति का
ट्यो सिय हि छंडा रख्यो रघु गरज्यो रावन बिकल गीध पै धाये धरयल बहु रिभुजा नि ३०
ज पाये पुनि लेउ भरि छातु लवल जोधा हन हिं वेक पेक निकरि कोधा दस हु कवा
ग रोन पार्यो खडग अमोघ छल रत बमार्यो कटे पार परा गिर्यो खग जैसा सिय क

लेसत ते कालिंत कलेसा सिय लै औरै रथ चढ नीचु चल्यो लंक लै आपन मीचु राम राम लखन
नयुनीता रावन करत जाति इ मिसी ना विलगन उ उनते रषि ज्ञु कुल्यारं करत नाथ हरे है जना ध
इ दोहा मम कुल के ते मजे ठ होतु म्है उ चित हिनै तर कै छीनउ माहि निजवल हि करइ षबर के जा
इ प्रन बाति पुनि पुनि पवेन कहेत तुम परस्यो पति मोर तुम्हहि वियोग विपा विद्दिन नातें कारहुनि
होर चौपाई रामहि मेरी बच विहनु नावइ ले उ जगत जम मोहि वचा वइ तुमन नम च्च हो नाथ केव
रने कै लेसहु मोर अपर रने विन उ तो हि वह भांति अकासा मम हित होहु विनति अवकासा
पहि विधि विलपति लै हरि छाई रथ मह कहु गिरि मुरछाई करति सोर कहु विरह बावरी कहु
करत अस अति उताबरी रघुनाथ आ पे जुनु भाई अपते नीच सकत न हिं जाई कहुं प्रलप
ति का पति कहु रोवति कहुं चकित न चष चहै कित जो वति कहुं सार अंग कहै न हि वैने परि
विधि परी सो यह दुष वैनै दोहा नमत ते परचत तासि बर परयां च कपीस निहारि चीर चीरि जुष
न सहित सीय हि न नतहं डारि चौपाई रावन आतुर चल्यो सलंका सिंधु नाघि पहु च्यो मधि
लंका वन अशोक महं सिय हि टिकाई लषमनि सिच रिन सौ पि सेवकाई पुनि निज भवन

आर:
३१

हिरावँन गयो सियपग लखि निरन लषमण देंष्यो बिलपति बिबिधि भाँति बैदेही सुमिरि सुमिरि
घुनाथसनेही रायकमललोचन रघुनं[illegible]न कवलु बिसेषु निकरि षल षंडन आनदअव
ठरहिं जिन लोचन तेई करत सोच जल मोचन प्रभु सुरजेन कहिं निरंतर तेरउ गिरे घरि
बलन भयंकर सायक रमगति जानि न जाई हितसि मोहिं मीचु बिसराई सेहा चतुरयें
कई गिरि सुता जो अपने पिय संग रहति निरंतर ले ति लख अरध आधकरि अंग चौपाई
छन बिछुरे तन बच हंहिं पराना अव न हिं कठहि कठिन भे प्राना परसि पद नप्रभु अँग रहत
आवे ने कुरंमारी जर नि बुझावै कै निज मीत हिं करि जुआई हरहिं सोक मन तनु हिं
जराई जी धरु मित्र्यो पैकउ उपकारी ते हिं ज्रिपरयो देव अविचारी आपे आश्रम हुनानि
तरी हैं है नाथ बिसेष दुषारी जब करि तासी रतंजु पाई कहिनहिं जाइ नाथ बिकलाई
अपनो सोच मोहिं न हिं जे ते ते उपजत दुष निनाथ गुन ने ते कहु कब रीमे लषन हिं बानी
सोई भोगइ फलु दुष षानी सेसा होवत सोचाति बिबिधि बिबिधि बिहरति अवजु गनेन जंतु ३१
कुरीपि जहं पति महा बाधि कके बैन चौपाई यकरह जनकि कहं ठगी सी रहे सपना

पवनउ व्याकुलकरै कहूँ करनि रैपु रैंमी मारइ तैंकतकरति अरै निठुराई ईसरहतो क अवत
होनजाई मो किंबिबर रै ले लिंछ पाई कहुँ मो हितनिरखतिरघुराई जागे फेरि बिकल फेजा
ई अंतर उरपरि सोंन तिसारै ते हि अंतर गिरि सिंधु अपारै ताको बिरतवरनि किमि जा
ई सेस सारदासकहिनजाई आवत लछ्यो रहि है निजमाई मनति बेदमुखरत्यो सुभाई
निहचै किपहरि हैहै बिचारी यांकि तन रह्यौ तेहिं उघारी तेरा निसिचर हैं निंपुनि अव
धमरैं करि हैं चरित अनेक तेहिं कहि हुनित रहिहै सकल जग जनबिन तिबिबेक जो पारै
१ असगुनि बोले अनुज निरा आपेत जिमम प्रानपियारी सो तुम लछि मन नीकन की
न्हा कैसा पायो कोउ के हरिलीन्हा तव लछिमन कर होउ कर जोरी सुनहु नाथ कछु चूक
नमोरी निसिचर जब नाथ तिकी बानी देखो मोहिं तव सिय अकुलानी प्रभु परमो कहें
लागिय तैं ताकनु मै बहु भाँतिन दियो सिखावन तब कहे वचन सियामो हिंकु रत्यो सोहुं
निकां नमूहि सिर रत्यो मो सैंन सो न तिजाति सुनायो दैव अति दुखित नाथ मै आयो प्र
भु कर तउ नीकन हिं कीन्हा अबला वचन चित्त मरै लीन्हा तेरा कोउ खायो कै लैग

धार पोषतमनैंनतिसंदेत आसकरि आतर आश्रमतिंगयेरामजूननेर चौपाई सियहरिनदेषिनाथ
३२ अतिसोचे आसकरिनैननजलउकनमोचे हाप्रियातुमदेषिनपरौ तवकसममसतका
रनकरौ जोतुमछ... योप्रियाकरिहांसी सोमोहिहोतउसरुषहासी केन्यासर्वसताकी
अतौ तमकोउचितवियोगदिसलो होतवियोगप्रानजोजिनको मैंतोप्रियासवनलोनि
नको मोसोविरतसलोनहिजाई हांसीनजहुंमिलहुअबआई हैसियरहिनेकुटीविसषी
कैआश्रमघरआनहिदेषी महीऔरकैसघनहिदेषौं कैभ्रमहोतसाचकरिदेषौ ढूंढ
चीन्होनलषिपतवाठिकैलेगयेवनजियतहिसमै मृगढूंगनहरिकरिचैनकोकिलनहं
सकरिगंमनैकुमै ससिहंसनिचंपक वरनहाडिमरेनताकिसलैकरनको सुकनाककं
ठकपोतवांहुमृनालउनपलचरनको नेहकीनवेकहूंउचितपरजोमोकूरवनसीन
मोमरहै सीवुद्धितौराजहोतकवचीन चौपाई हरिनहिरैन्योकोकहुंहोई मैंनहिदेषि
लषांनीघोरे मिलतकुसुमकिसलयतुलसीको निरषिसैनपलपुनिप्रभसीको ३२
वहप्रकारतहंथितलषननजागे देरतहिथहिचलैपुनिआगे नहसमीपनिरषीनव

नयनवच्छी चोखीमनहुं नरनकीमच्छी सुमिरतसियविचरहिंवरवनतमर विविधिभांतिकैनिर
खेतरहतहैं तिनसोंकहयोलषीतुमसीया ऊंचेरहसहितनिजतिया जोसाकहीसियातु
मजोहैं चाईंवोमलेनतेरेनहोई यहिविधिपूंछतनहीतरुनसों विचरहिंव्याकुलरहतहि
कहनसों हेखग प्रतिनगप्रतिमृगप्रतिविहंगप्रतिपांवनकरिप्रीति पगपगमहंपूंछ
तफिरतपरमविकलकीरीति चौपाई पूंछत चलेनजहिंकांननकोहौ वेगिहिंमोहिंव
तावहुजोहौ बोलेअतिव्याकुलहैलछिमन नाथनाथमेरेहौतुम्हारजेनकोहौमु
हीकहयोरघुनायक तिनकहतुमभगवतसबलायक हमकहयोभगवांनहिंकोहैं
लषनकहयोरघुकुलकेचजोहैं प्रभुकहेरघुकुलमहंकोईसा तुमहिंअहौकहसपदध
रिसीसा प्रभुकहविजनवनहिंकाकरिये तिनकहहेरतनारिविचरिये रघुवरकहयोना
रिपरकोहैं तिनकहजनकसुताकहुंजोहैं सुनतनाथकहसायजांनकी विलपहिंसु
धिनहिंकछुअपानकी हेत करेपरेसियसीसकेसुमननिरमनिहारि बोलतमेतं
हिंसैलसोंकोधितगिरउचारि ल्याउसीयकहंवेगिघननतरुकरतहौधूरि मृगजंनवग

आरं: ३८

गंनमांरिसबलताकुमन गंननतरि चौपाई पेनोकहतचलेप्रभुआगे लषिउपटेसियपग
आंनलागे फिरिउपरेनिसिचरपहदेषो टूट्यो धनुसरलषिजयलेषो कह्यो भयोनच
निसिचरसीतै लईषायधोजियतसभीतै देषनजानिमोतिवलहीनो रहाथरमति
नहिनरिकीनो टूटेचमरथहु आनुचषुतर मारेलषेचारिमारीघर कोयितकहतवनै
नरिवैनै धनुहिसितवत आननकरिनैनै यहसंग्रामजानरैकाको लछिमनमोहिं
वताओसाको केरिनिरषिसतहिंविनयाना वोलेएमछिरावतवाना छंद मेतोजि
तिहीजगतलिनगुनमानघरूनारसहयो शहिंविषमओसरपाइहेघरिंसरिसव
गंनगंनभयो तातेषउनमलघहलछिमनभूतसवसंभरतहै अतिरोषकरिसरत
जिमेपानकजेगत घाकहिंकरतहो दोहा असकहिकरवात अथरयप्रभुरंजेवीरसरंग
लछिमनकरतेछीनिलिए आति आतुरसारंग चौपाई रघुविवंनचघसमसरलीनो ३८
धनुघचवारतेलयप्रभुकीन्हो भयहोकोपितभवसवभयो निरष्योलषननाथवपुने
यो तवलछिमनहेउकरजोरि कह्योसुनियविनतीप्रभुमोरि नाथसकलजगकेहित

कारी अतिकोमलप्रभुरहै अगारी निजसुभाप अवके हिं रितन नजिये जगजा रनहितक
तमरसजिये अपराधीयक अरहितम्हारी चारहुनाथसकलजगजारे परतौ हीति
नुराउरिसोई करिविचारकरियेपुनिसोई प्रथमवीजिचहुदिसिसिपलीजे मिलहिंन
तौजगनासरिकीजै दोहा असकहि लुपरे लखेनयगछमछछमडुरघुवीर जगतं:
वचावहुंत्याग अवसोकहेवधरिधीर चौपाई एहिविधिसमिततकीनजवभाई च
लि आगे कछुलघ्योजटाई पांउवगलहोउपसउभंगा भरेरुधिरजहेसव अंगा ता
हिविलोकिनाथनहिंचीन्हो निसिचरजानिधनुषसरलीन्हो सोवोल्योमैगीधजटाई
देषिलेहु आवहुहोउभाई सोचितकैरघुवरततरजये गीधदसालषि अतिदुखछये
आयनेजटंनजटाईकेरी रजभरीकरिकृपाधनेरी सोकरसियपवहेंसगमभप्रांनन
परवसकहिलैजपोरसानन तासोंजाइजुद्धमैलीन्हा रघुधनुतोरिविकलतेहिकीन्हो दोहा चंद्र
हासपुनिनीचलैकाटिपषसघगनोर लेसीतदिसिजातभो आतुरदछिनवोर भरेरुधिर
रजगीधकोमिलेरामभरिअंक कहेरानसिपभ्रुलिजेमोहिंजीधको संक चौपाई परेयहांमिउ

आरं॰ षसो नेति सोचहि बारबार लोचन जल मोचहिं लेउ सांस व्याकुल हरि कह्यो दुषपर दुषपुनि दुष मैं ल-
३४ ह्यो बिगत राजबन बास करन भो तायर दुषबड सिय हरन भो पुनि पितमरन सोक जो मोही
निरषहु बिकल तात भै तोही मन सोका गि आगि हूंजारै पेखहु सिधु लोर जल धारै लछिम
न निर्दयै रिन मम काजा अनिषिप प्रान दीन षग राजा अबलिं प्रान कधु धारै आरे व्याकुल
तात केकछु न लिके हैं पुनि कर घ्यवै कहं न तात जनतारई कुरडुष बरिजो कछुक हि जाई तल रहेड
कसौपुनि लषेड किमि निकस्यो षलजब आई सीय स्यापुनि किमि निलषी कुरहंके कछुक तो
गाई चौपाई कै सो निसिचर किमि वपु आहै कुसाय रात मकरे सो रहै दुषित राम लखि सि-
स उनाई साल सकरि पुनि कह्यो जटाई तात न कोपि सिय मूढ संतन कीन्हे मायापर मन
पावन पवन प्रचंड मेघ घिरि आए तब सिय करन लै चल्यो छपाये ते रिमै लषि रहन जुध
कीन्हो सो आसि लै पर बिन मोहि कीन्हो कारन चरत मो प्रान पपाने भवन नैन देषहु कछु
आने मैसा रत सो धीर रघुनाथ पू जेहि मैर रसि सीय रहस माथू बिंदु मह रत मरै जो जावै ३४
मरै सो चोर बस्तु फिरि आवै तेरा सिय तरि देहै जानु रहि परहस कंध अजान जिमि स

फरीं वंसी लगें नजाति अस नसगपान चौपाई तुमासिय हेत सोकनु हिं करै हो रघुवंसी रोसरि
धरै सकुल मारि ते हि सीय रहि छजावो विस्व विदित वर विर रच दावो रे रिकत सा को अहरि
खगेसा काको सुत नकर अरे निवेसा खगक हैं पुलसति करनाती पुत्र विश्रवा कर विष्या
ती भाई है कुवेर कोराकृति उगिल्यो मास उधिर मुख ते मरि तज्यो प्रान खग यों उपसारी प
रहु करहु अस एक तन घरारी मरे गीध लागे हरि सोचन चप अम्भोज अंबु कन मोचने बहु
विधि दीन वचन कहि रोवे पुनि पुनि गीध वदन प्रभु जोवे रोता कस्यो राम या काल की
परम प्रवल गति भाइ याके सग वड दिन वसे वि दुरनि कि मिस हि जार चौपाई यह
नयर खग खग रत हि कीन्ही अब मम हेत देह तजि दीन्ही पर खग पति मोहि परम पियारा
रो परो निसाचर कर सों मारो ताय गीध पति मम उपकारी कहौं न पहै किन कर हु प्रकारी
त्यागे देह कल खग गन के राज अति प्रिय प्रान तज्यो मम काज लछिमन देखहु पर उपका
री साधु सत्य सुधरम धुर धारी तिरजग जोनि ऊ मरहे पेखी गीध कर्म ये अग्र अनुपम देखी
लछिमन सिय कर दुख नहि ते तो मो उर सोच गीध को तेतो मोहि पिता सम पालेन

आरं पती व्यावरकारकरदुपरिगती हेत चितारची पुनिमाथि अंनलगीधरि आगी हैन परे
३५ हिनकै वंधु हेउ व्याकुल ते रन कीन चौपाई धरि धीरज तहरि वैसन लागे गीद्धराज पर अति
अंनुराग हेनजोगुमघ फल श्रुति गावे गीद्धराज सोगति तै पावे लहि विज्ञांन प्रेमसुष
न धामा आंद मैतनन्दकघन स्यामा जाके उपर औरन हिलोका मसोप्रकास हि आंनर
योका जरं केगप्रफेरि नहि आवे गिद्धराज तेने हि पुरजावे पुनि रसरघगति प्रभुते
हिलीन्ही करि आहान कनि सबकीन्ही धर्मो गीद्ध नव सुद्ध सरूपा अस्तुति कियच
ठि जांन अनूपा वैकुंठ हुलगिमोगसो भोगा तुहिगयति हिं सव भव रोगा हेत फे
रि डुमजसी द्वेगयो गो पुरनि त चुवधाम नित्य सघंहे वसत मोनि कर जांन कीराम चौपाः
चले राम पुनि तेरनसीघा आगे ल विकांनन कमनीया विरलविपासो चातिनन तये म
गनि विलोकि कुरत अनंप सठमारि चहेदेरनधारि तेहि कारन गे पांन पियारि मनि ३५
नि मारि हनकोडुव देसे जिसगुध अंध अजस हिसतिलेसें असकु हि वैचिसरासनधा
पे हिपनै नीगुनिसरन चलाये ते तलरनते विधुउरघनि हारि कहयाराम हवा कि विचारी

उतहिमनसलिलवेगिलैआयो धायोरहत्वागिउठायो लषनकह्योयहअबरैनआगी
भयोउदैयहचंद्रअभागी दोहा तापकरीघाकीकिरनि ससिकिमिजानेहुभ्रात लखि
मनकहमगअकयहहेरषिलीजियेतात ८ चौपाई सुनतकह्योहरि लामगनैनी तायजा
नकीकोकिलबैनी असकहिकरनविलापहिंलागे जैमुरारितिपुनिव्याकुलजागे
छनकमांहससिपूरनयेघ्यो हरितेहिंग्रीषमपुषनलेघ्यो चलोलषननहतरहरिक
ह्यो फैलिमरायेर आतपरह्यो लषनकह्योनिसिचरकहुहोरै भ्रमकरियेप्रभुस=
सिकरजोरै हरिकरजोससिधूमिकतकारे तिनकहांसितिछयायहिंमाहे सुनिहरिथि
हकरुधरनिकुमारी हायसिये मनकरहुसुधारी पुनिहरिकह्योसुकविबहुलषिम
न करसिचंद्रलछनकरवरनन ८ कोउकहंहि याहिवलंककोउकहतहि करंस्म=
सिंधुको कोउकहंहिंछितिछयापरी कोउकहंहिजछमाईरुको कोउकहंहिरणम
गुकहंहिंकोउमगचर्मयाकेउरलग्यो मैगनहुंधूमरहिं आहियाकेमाझिविरहानलज
ग्यो दोहा मोहिंजरावनरेनको प्रगटकीनससिआगि फैलाईमिसिकिरिनिकेसोरैच

आरं: हं कित जागि चौपाई पुनि रघुनाथ पनि रावि के चरै कल्यो तापकर है अति मंदै मणेमंदराव
३६ न सो न भयो अरे वज्र तन न पी सिन गयो सुजन घार जीन सठ तो ली तछो रेत रेन उघमो
ली जो न हो न नासि यमुख अनुहारी तौ सर हं निनो हिरेत उजारी पुनि अति विकल कहंन
अस लागे विरह विथा मन हहरि अति पागे भयो चंद्र पर तर न समाना लगत अनिल
जैनु वे धत वाना गड हिलु ईसमकुसुमाहु माला चंदन ले पल जैजं नु ज्वाला भई कुल
सन सम पहरानी देति उसहं उवनो हिसिरानी सोरठा प्रानउ भे अवभार सिय वियोगन
रि जारे सति सोक समुद्र संसार मो हियलि छन देषो परति चौपाई पुनि हरि कत्तर रेउनी २
ता उर निवार षल अति अपुनीता मं उसु मनु मन सिज वानी सुनि मो हि मुरो निज उ
घति उषित गुनि विरह ज्वाल मम तन न जरि रह्यो जरे जरावन हितसर गतयो पर नहि
रीति धरम की तोई पामे वीर करत तन हि कोरं पुनि कहं पाचो सर तुव सूट पुष से वहै ३६
मोहिय फूटे अति ती हंन विरह लागि निपरे मोतन सगत तुसां वोनहं जरे अवत सुति निर
आउधके सें विष विरं जन वर विषधर जैसे मैं पकउ वीम नि नउ घ जयो सो तो वडत

नीकउपरहंभयो दोहा पुनि अतिसोकसोकरतनमेयपत्रषबलालेनोर अतिसियके अंनउग
सो अतनुनभयोमननमोर चौपाई तुम्हरेकुसुमासिलीमष आवै मोहियमद्दनसिली
मषधावै मोरितोरिसमताई आवै कछुकभेदइमि मोमनजहै तुम्हलतिकेनजुगनै
तिपतीना तुम्ह अतिसोकमुहिंविधिइवदीना रंधिमननमोहियांमविधिभयो किसतातेंपलषु
रिसबजयो नेननयारनीरकरिगयो तियअपहरनतेजरत्तभयो लेतउसाससमीरहजयो
सिपसुमिरनमयसिपमयभयो तेतिंकारनत्तभयो अकासा भोयहिंविधिसवतत्वविना
सा कलिसहुनेयहकठिनसरीर विनुहंतत्वजीवतसहिपीर सोरठा फलीभैंसोक ओन
भोकननारसह्यअब लषिनयरहिमोहिलोक गहहुलषनमैगिरनतौ दोहा असकहि
पुनिपुनिविलषियैविकलभये अतिपीर तवलहिमनरघुनाथकहंपांनिधरायोधीर
३ हरिकहंधीरजसोककठिनसोकजोनेकासिर नउतीप अपहरनकीतापल्लाजकिमिनारे
चौपाई सुनिलषनहूं अतिसोकहियापो औसरनहि असगुनिविसरायो कह्योलषनमो
नायप्रमाता तरानिनिराषिविजसेजलजाता कटहिंसिलीमषकमलनिरासी जेंनरवि

विरहविथाकीगांसी धौंतमखंडसरोजनिछये विगसततभागे आतपतये देखियउरितभयेरविसुहा
सुधालतापूलंजनगुहा मनिरविकांतिअनलकोनभरती मनहुनाथलउविआरतिकरती हरि
कलभाईनयोनभोये तजिकेचुरिमवंगभगधीये फलितविषमविषयाकेहगनी तरनिनप
रताहीसिरमनी होत पुनिलछिमनसमभाइप्रभुनित्यकरमकरवाइ दंडकासिपकाननसं
धनकरगहिचलेलेयार चौपाई मगविचित्रतेहिंवनवहुभांती गाहगवैगेडागजजाती सार
दूलसरभनतेधोर भूतवेतालकरालकुसोए कुसमितसघनकुंजकुलमांही चुवहिंचारु
मकरंदसदाही तेहिंजलपूरंनआलवालहैं बोलिरहततहमधुपमालहैं कोकिलवालललितत
हंखेलत कोमलकरिञ्चलापरसेलत नाचहिंमंजुमनोहरमोरा विचरहिंचहुंकितचारुचको
र अतिउतंगनरूलगेअकासा ततवहुंविधिवरविहंगविलासा विविधिजेनतिनकेफलघाती
सुधासरिसरसहैजिनमांही होत हैरसालहिंतालकुजंतमालवकुचनाल औरहुवहुविधि ३९
विटपगनतेहिंथलललसहिंविसाल चौपाई हीचैंमहजलमनमतंगा सरलसपरंनसुवेनुउ
तंगा लालितलवंगलतनसोमडित सोहतऔरहुलतनअखंडित पुहुमीपुहपपरागनिपूरी

विविधि विचित्र वरन सो लहरी कुसुम हरित कुसुम विधि पलासा समीस दित्त लि तिक रति हुलासा
जैनु विचार प्रसि पल्लु ह्योगयो कहं वन ऐसी ह्व विसोह्तयो विचरत मंत्त मरि एक कहं भारी तरं
वनं जंनु जं मधुरी निहारी फिरन न जुत कचहु वन धेन सो मा पावस रितु जंनु है अभिरामा
कहुं कहि सलै विजना निलसोरी अरखी उत कोठिते सिजोरी दोहा कहुं कर कित अवत मधु
तरुत्त तिसो वन राज पुंजकित सुष आसुन तरै मन हानि रविर थुएज चौपाई चौ विधि कम
लकालित वहुसरी सीतल अमल अवु सो भरी आरि अगास्ति मुनीसन नारी चन्दन अग
र कस्तुरी धारी ते अस नान करहीं तिन माहीं जल सुगंध मय रस तसदाहीं चलि रहिंहि न
सिखलै वधारी निकासि सघन वन कुंजनि भारी तिन सरितन तरंग सर सोवात विचरत विर
हिन विरह यढावत विरह विकल ऐसे वनु मारी फिरहिं राम जहिं लछिमन वारी काकबैठ
रुक रघर वाये फिरकिरात चरसीस उठाये हंसिन से तप केनी कुंकर रई खंजरीट ते रिंयन लिं वि
चरई दोहा तिन हिं निरखि मन गुनत प्रभु करत अस मयरकाग कहा अधिक सिय विरह तें
कैसे मोर अभाग सोरठा खंजन सचत राजि हरिनि नैन यसनचत यह परग नि आवतिली

आर जि। सियबिनकोकरिहोइजी १ होइमरनतौमोर राजिहोइतौलषनकी करिकरिविविधि
३८ निहोर आगकेहपुनिचलतमे जोतिषहेउसुजांन निदरिकागकरपीठिदे आगेकि
योपयांन सनमुषकरिषंजनफेनी चौयारे होउवधुधनुषसरलीने संधनगरन अवगा
हेनकीने निरषोतहांनिसाचरभारी उमरवदनमहाभयकारी भौरीभैहोउजोजनम ज
रि आवहिमधिजेजीवषातधरि नामकबंध अंधहोउलोचन तेहिभुजमधिसेउगेउ
षमोचंन हरिकहमाइनिसिचरहेषी सिरबिन अहभतेविसेषी पतिकैवडेभजनिम पद
धियरे कौनिहुभांतिवंचियनहिटरे लषंनकह्योनिजबलहिविसारी कहोकहालहुवा
नधारी सोसुनितनसुधिलहिरधुनंदन कीन्हेमननाकोभजषंडन कवित्त पूलेरवित
जवारेज्वालावलीजगीभारिउठतीअंगबीचासातौसिंधुपायकी कीन्हेकारेची
तकारतालीधरावारबारयाभीननहिरहेसेसकेहजारमाथकी कुर अकुलांनलागेस
जीन आनंदयाजेवीररसवंधुराम्योरेषिउतिनाथकी कोलहूहकारिवोल्योरहइती
जोनैनबोल्योकरतैकरालीकरवालीरघुनाथकी हेहाहनननचरतजोलोलषंननोसो ३८

असि रनि राम मिल्न करि रहिन भुजा कारी लषेन है धाम सोरठा सो करि मन हिं विचार
कहै कौन रहे अति बली मम भुज कार निहार देष रनु जन हिं निसिचरे दोहा प्रभु कहे
उ रसरघु सुनैन नाम मोर है राम लछिमन रईन कोना म है अरे अजो ध्या धाम चौः हरी नि
साचर नारह मारी षोजत चन वन फिर हि दुषारी देष जोग तन भुज मधि आये वचे वेरहित
भुज कारि जिराये तुम को है अब कहउ कुमारी सुनि सो बोध्यो तिय पर घाई करि करि पुं
नि पुंनि प्रभु पर स्वहन धन्य धन्य मेरो रघुनंदन जो तुम मम समीप प्रभु आये सकल सुक
त के मे फल पाये पूरव सुर गंधरव रहेउ अष्टावक्र रिसाषि मेर सेउ पुनि रिसि मोकर
घोर सरापा निसिचर होहु सतहु परितापा मे पुंछेउ तेहि श्राप हिं मोचन मुनि दयाल कर
हरि जल लोचन दोहा त्रेता जग श्री राम को है है जब अवतार तब वह दिहै जै श्राय तें सरि
त सकल भव भार निसिचर कृत तप कीन मे विधि अवध्य ताहीन सो सुनि कै निरसंक अ
ति लोकेनु निज वस कीन दोहा करि करि समर निभुज निवल जीतेउ अमर दिगीस वज्र पानि
वज्र हि हैं षोध रहि येहि यज सीस चौः निकरि यरे दुग हीन हिं भयउ विधि वरहं न पांनन

आरं: रिंगएउ तबतें नाएउ रति यज्ञ जपरे धाइअजीव जेयाइअधरे हरी छपवे गहिं गाउबनै ये इंधनुम
३९ रिमम तन तिंजू रैये रिब्यहूय धरि सियस धि कतिहो तुमहिं चि लोधि मोर आतिलरि है
सुंननत रामनत बनै सुरतिं कीन्हो तेहिकाद्दर्पसादू सतन हिन्हो परस्तिन क्रियमें बनुधारी श्री
स्तुति करि छकारूपो निताही जेहि वयुध्यानासे बासिवकरै कासी नामकरत भवतरै
नामरूपसो मूढ़ न जाने नारकजीन माँनउरठाने हेरा दूरत सियकर धनुधर पर श्रीन
यमहेउ भार रहुँस हेममममनवसे सो करसी सनवार सोरठा चाहिन्नाहिर हुलय
जेगन्ताणयर श्रीवधपति हिजेमो हिछ डर निजमाया तेकरि कृपा चौ: हरि करत
ममम धांमहि जाउ लैपलन्नमेलखितेंबं भाउ चलन करतो सबरीपर जेपे नाको सुरवपुरर
२ सेपे ताकेउर अतिमगति तुम्हारी ताहिनाथ श्रव केउसू धारी सोतुमकरत निजप्रीतिरमाई
सीताकी सपक्षवारिवनाई श्रीसव तिचाठिवे वानसो गणो मगनमता आनंदहिंमणो आप ३९
सेवरीपर हे उभाई सोल खिपमसोइसोहाई धरिकरती रचियरनानिलारी निजसरीरकीय
बारिविसारि चरनपरीपुनिपुनि वपुजोरि जेवकश्रीवुपसवुनधोरि [illegible] परस्धोइ मवकुषसो
रलुंदर हेपजोपमर्दमेते निजदेहें सीवेउजेत श्रीनंस्मे तहिंजहैंपुनिषरी वदपुजितरसफल

अमनतसेमनतरहे संचितजेक्रिपे हरिषांहिं अतिमुरमाहितिनहिं सराहिसेवाहितिसुषरिश्रे सोः
वंधुसहित अंचवार सबहिंबोलीजोरिकर आनंदउरनसमाइ जयजयजगरणासिंधुप्रभुकरति
चौपाई नाथगहममममुनिमातेगा रहहिंरहहिंसुभरगितहरंगा तिनकोसेवामैपहिंकार
न करतरहिहतवरखर जारन तेपरलोकचलेनजवजागे मोकहंसांसनदिए अनुरागे रस
रघसुतपर आनमराम तिनकरध्यानधरेयहिंठाम भागवनीतेवसकछुकाला चै
हैसुजनहरिकरनविसाला तिनहिनिरषितननतपवलजारी जापहिंतिनकेधामसुषारी
सनिसोरसिहामहमतिहीनी वसीरहीतवतनरंगभीनी विरषनजेमीठफलचाषे ते
नचनतेतवहितधरिराषे तेता गरसांसन अवसफलभो आपेतुममममजेर असकहिव
पुहविहाकरहीवोलीपुनिसिनिनेर चौपाः जोररसैनसुषगुरुंनमपउ सोप्रभु मैध
धरवैठहिलरेउ मैतवादससलसकीदासी तुमसतचित आनंदप्रकासी मनबुधिव
चंन अगोचरजोई वड अचरजममजोचरसोई मोसमअधपरनपरतुमसोंरहरि दासी
सोउनाथमैकोकरि सवरनजातियरम अविचारी किमिअसतुतिकरसिकौतुमसा

आरं: रहै प्रनहीननके माई तुमही वसहु मन रहिं मम आई पुनि बोले प्रभु सुनि सुजन तारन मेरे मिल
८० ननकि ही कारन आश्रम जाति पुरुष अरु नारी इन महं नाहिं विसेषि विचारी होइ वे
इ पठव अरु होन मध तपु औरहु इन आदि साधन नहे मेना मिलो भक्ति विना श्रम वारि
चौपा: तातें कहहुं भक्ति के साधन जेहिं विधि करहिं जीव अघ साधन सतसंगति मम कथा
करव पुनि पुनि गुन वरनन मोर रहिहैं सुनि पुनि मम कथा माहें अति प्रीती पुनि आचा
रज सेवन रीती नेम पुनि मम पूजन माही मोर नाम पुनि जप वस रही जीव विराग स
हित मम भावै सव जग महं मानहिं मरिचा वै होइ तासु उर पुनि विज्ञानै तातें निज सरू
प पहिचानै अस साधन नव भांति करै जव प्रेम लहै जो उर उपजै तव जाति कुजाति
जो निज ग कोउ मुक्ति लहहिं ज्ञन यासहि सोउ होत सतसंगति ते होहिं ये साधनः ८०
आध्यकार सतसंग तातें करहिं जिनके विमल विचार चौप: तोरे उर पर मगति हे
मोरि तरह समीप नाते मै यारि जो कहें सवहि भक्ति कराहे विन श्रम औरे ति रहे जो चा
है मो सैन करहि ना पवै मो चैनि जांनी होइ जो पुहु करलो चैनि विन श्रम औरहि रहे

चार: ४१

जो चाहै सो संतपूं लेउ न रकी नांई पै प्रभु कहें आप के सासंन गयो सीप ले लंक रसानन तो
ते निकर आवैं पंपा सर तहं मुनि रिष्यमूक समगिरि वर धारि चरन ते तिकरि पसनाथा सि
'प्रभु धिल रव मनो रघुनाथा मनि निजजन सुग्रीव नसौ है ते उतिपठ यउ षित महां है ६८
ते उह षित तिप ठ्यहि बाली बंधु उ रागि रिम हैं रहैं प्रभु कारि पतिन करें मीत ते उमीत अ
नि सम रषुचरैं वै करहिं गेसवकाजमें आवजारवोनव पुरचहों रिकि जाइ पेप्रभु तनके
जव तक रहें तन पव लमे रहै सोरठा असकहि सो तनजारि पारैं जो गिन अल भगति जे
हि पाइ पेषरारि ता हि मुक्ति सव सुलभ है दोहा सवरी सवरी जाति जो पाई गति निर्वान
जे उजर षुवरपरभजै तिन के सम को आंन सोरठा सौंमसरोज रुह स्यांम राम नाम अ
भि राम तन भजहि ताहि सवजांम तजि कुले सविज्ञान को इति श्रीमहाराज कोमार श्री ४१
वृषुसाहेवुविस्वनाथसिंहजू देव कृत आरन्यकांड समाप्त फागुन वदि २ सोमारकों स
वंत १९०३ के साल श्रीराम रा म श्री रा श्री म श्री रा श्री म श्री रा श्री म श्री रा श्री म श्री र

आरन्यकांडसमाप्तं ॥ १५५०